जूलाई - सितंबर 2015 भाग XXVI संख्या: 2 ISSN 0971-1856

# भारतीय नारियल पत्रिका

नारियल किसान और उद्यमी सम्मेलन
**जूनागढ़**

विश्व नारियल दिवस समारोह
**विजयवाड़ा**

## इस अंक में


अध्यक्ष की कलम से ........ 2

नारियल उत्पादक समूह-किसानों की समस्याओं को सुलझाने के लिए अहम मंच ........ 4
*ज्ञानदेवन आर.*

नारियल के प्रोडक्ट बास्कट ........ 7

कृषक उत्पादक संगठन-नारियल किसानों की नई उम्मीद ........ 10

नीरा - कल्पवृक्ष की चमत्कारी देन ........ 18
*एस. बीना*

दिल्ली एवं राजधानी क्षेत्र में नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों की संभावनाएँ ........ 22
*जी आर सिंह एवं अरुण पॉल*

उत्तर-पूर्वी भारत मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के लिए उभरता केंद्र ........ 23
*रजत कुमार पाल*

बिहार में विभिन्न नारियल उत्पाद पेश करने से पहले जागरूकता पैदा करना आवश्यक ........ 24
*श्यामलाल*

नीरा जिगर की बीमारी दूर कर सकती है ........ 25

नारियल के नुस्खे ........ 26
*इन्दु नारायणन*

प्रश्नोत्तरी ........ 28

नारियल कृषकों को क्या करना चाहिए? ........ 30

समाचार ........ 35

बाज़ार समीक्षा ........ 43

बाज़ार रिपोर्ट ........ 48

# अच्छी टीम और नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के सहारे आगे बढ़ें

प्रिय नारियल किसानों,

बोर्ड ने यह मानते हुए वर्ष 2002 में नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना की शुरुआत की थी कि भारत में नारियल क्षेत्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए खोपड़ा और नारियल तेल के अतिरिक्त नारियल के विविध मूल्यवर्धित उत्पाद विकसित करना अत्यंत अनिवार्य है। वर्ष 2003-04 में योजना का कार्यान्वयन शुरू हुआ था। मिशन के अंतर्गत नारियल के नूतन मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित की गई, पायलट परीक्षण चलाया गया और वाणिज्यिक उत्पादन के लिए उद्यमियों को प्रौद्योगिकी अंतरित की गई। वर्तमान में 334 इकाइयाँ खोपरा और नारियल तेल के अतिरिक्त विविध प्रकार के 13 नारियल उत्पादों के उत्पादन और विपणन में लगी हुई हैं। इन इकाइयों में प्रति दिन कुल मिलाकर 71 लाख नारियल का प्रसंस्करण किया जा सकता है। प्रति वर्ष इनकी प्रसंस्करण क्षमता 213.6 करोड़ नारियल के बराबर है। यह, भारत के कुल नारियल उत्पादन का 9 प्रतिशत बनता है। देश में नारियल के लिए किफायती, उचित और स्थायी भाव सुनिश्चित करने के लिए हम अगले पाँच साल में इनकी प्रसंस्करण क्षमता दुगुना करने का इरादा रखते हैं। अगले पाँच साल के लिए नारियल प्रौद्योगिकी मिशन का प्रथम लक्ष्य यही होना चाहिए।

भारत सरकार द्वारा कार्यान्वित मेक इन इंडिया अभियान के फ्लैगशिप कार्यक्रम में नारियल के मूल्यवर्धन को भी शामिल करने की ज़रूरत है। यदि हम सही आयोजन और विज़न के साथ स्पष्ट रणनीति से आगे बढ़ें तो भारत सरकार की इस पहल से नारियल क्षेत्र भी लाभान्वित हो सकते हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा नारियल उत्पादक देश है और उत्पादकता में भी हमारा प्रथम स्थान है। इसके साथ मूल्यवर्धन के क्षेत्र में भी भारत को आगे बढ़ना चाहिए। हमें नारियल प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, विपणन और निर्यात के क्षेत्र में भी विश्व का अगुआ देश बनना होगा। जिसप्रकार साउदी अरब ने देश की आर्थिक उन्नति के लिए क्रूड तेल की संभावनाओं का फायदा उठाया है उसी प्रकार हमें भी नारियल की संभावनाओं का फायदा उठाना चाहिए। नारियल प्रौद्योगिकी मिशन का अगला कदम नूतन एवं सृजनात्मक आशय और परियोजनाएं तैयार करना है ताकि नारियल देश की आर्थिक उन्नति के लिए लाभदायक फसल के रूप में योगदान दे सकें।

खेती और खेतीगत प्रणालियों में सुधार लाकर उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत कई अवसर उपलब्ध हैं। नारियल के कीटों और रोगों के प्रबंधन पर अनुसंधान चलाने के लिए भी अवसर उपलब्ध है। पहले, बोर्ड सरकारी एजेंसियों और संस्थानों को ही इसप्रकार के अनुसंधान के लिए सहायता देते थे। लेकिन अब नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के ज़रिए अनुसंधान परियोजनाएं चलाने केलिए निजी क्षेत्रों और गैर सरकारी संगठनों के लिए भी पर्याप्त अवसर प्राप्त हैं। संस्थान की काम करने की तत्परता और बुनियादी सुविधाओं के साथ साथ अनुसंधानकर्ताओं की क्षमता, सामर्थ्य और अनुभव परियोजनाओं को अनुमोदन देने की कसौटी है। वर्तमान में बोर्ड कार्यक्षम और काबिल निजी संस्थानों, बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध अकादमिक और अनुसंधान संस्थानों और अनुसंधान परियोजनाएं चलाने में काफी अनुभवी, योग्यता प्राप्त, सक्षम अध्यापकों और अनुसंधानकर्ताओं को सहायता दे रहा है। नारियल क्षेत्र का भविष्य सुरक्षित रखने के लिए प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन अनिवार्य है। हम मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों से अपरिचित नहीं है। हमारे देश के कोने कोने में कई दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के तरह तरह के मूल्यवर्धित नारियल उत्पाद उपलब्ध हो रहे हैं। हमें नारियल से बने नूतन एवं उत्कृष्ट उत्पादों का प्रोडक्ट बास्कट बाज़ार में पेश करना होगा। उत्पादों का चयन करते वक्त उपभोक्ताओं की स्थानीय रुचि एवं पसंद को ध्यान में रखना चाहिए। पूरे विश्व में खाद्य तेल के रूप में नारियल तेल का इस्तेमाल हो रहा है। किंतु भारत के कतिपय राज्यों में ही खाद्य तेल के रूप में नारियल तेल की खपत हो रही है जबकि नारियल दूध का उपयोग भारत के सभी राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में हो रहा है। क्यों न हम देश के अंदर ही इसका बाज़ार फैलाएं? एक ओर हम नारियल पेड़ को खोपरा पेड़ या नारियल तेल का पेड़ मात्र समझ रहे थे तो दूसरी ओर थाईलैंड, फिलिप्पीन्स, मलेशिया, इंडोनेशिया, श्रीलंका और यहाँ तक कि वियतनाम भी अपने देश के नारियल दूध और अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों का विपणन भारतीय बाज़ारों में कर रहे हैं।

फिलहाल नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के ज़रिए हमने एक दर्जन से भी अधिक नवीन उत्पाद बाज़ार में उपलब्ध कराए हैं जिनका उत्पादन पहले भारत में नहीं होता था। हमारे देश में डेसिक्केटड नारियल, वर्जिन नारियल तेल, नीरा और इसके मूल्यवर्धित उत्पाद, पैकटबंद डाब पानी, सक्रियित कार्बन आदि नारियल उत्पाद अपने पैर जमा रहे हैं। दौर्भाग्यवश देश की प्रमुख खाद्य प्रसंस्करण कंपनियों ने अभी तक इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है। यह एक स्वागतयोग्य कदम है कि कतिपय निजी उद्यमीगण इस क्षेत्र में आगे आए हैं और उन्होंने नारियल विकास बोर्ड के कार्यक्रम नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत सहायता प्राप्त की है। भारत में नारियल क्षेत्र में गठित कृषक उत्पादक संगठनों को भी नारियल के उत्पाद विविधीकरण और मूल्यवर्धन की दुनिया में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहन देने की ज़रूरत है।

कृषक उत्पादक संगठनों को लागत प्रभावी तरीके से नारियल के नए नए उत्पादों का वाणिज्यिक उत्पादन शुरू करना चाहिए। मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों के वाणिज्यिक उत्पादन में कदम रखते वक्त कृषक उत्पादक संगठनों को कार्यक्षम और लागतप्रभावी मशीनरी की पहचान, अत्याधुनिक प्रसंस्करण प्लैंट की स्थापना, तकनीकी और प्रबंधकीय क्षेत्र के विशेषज्ञों की व्यवस्था करने जैसी कुछ प्रमुख पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए।

अगला प्रमुख कदम उत्पादों का विपणन है। उद्यमी प्राय: नारियल उत्पादों के विपणन को लेकर आशंकित हो जाते हैं। आबादी में चीन, भारत, यूएसए, इंडोनेशिया और ब्राज़ील सबसे प्रथम पाँच स्थानों पर आते हैं। यूएसए 31.5 करोड़ आबादी के साथ भारत के पीछे तीसरे स्थान पर है। वर्ष 2014 के आंकड़ों के अनुसार शहरी भारत की आबादी 36 करोड़ है। इससे यह ज़ाहिर होता है कि शहरी भारत में अच्छी क्रयशक्ति रखने वाले लोगों की संख्या यूएसए की कुल आबादी के लगभग बराबर है। कई विकसित देशों की तुलना में अच्छी क्रयशक्ति रखने वाले शहरी भारत के 75 प्रतिशत लोग वर्तमान में इंडोनेशिया, श्रीलंका, थाईलैंड, फिलिप्पीन्स, मलेशिया और वियतनाम से आयातित नारियल उत्पादों का उपयोग कर रहे हैं। इन उपभोक्ताओं के लिए भारतीय उत्पाद उपलब्ध कराना असल में कृषक उत्पादक संगठनों के लिए एक चुनौती है। यह अनुमानित है कि भारत की शहरी आबादी का 78 प्रतिशत से अधिक हिस्सा 63 शहरों में बसा हुआ है। कृषक उत्पादक संगठनों को ये सभी 63 शहरों में नारियल उत्पादों के विपणन के लिए उचित प्रबंधन करना होगा और यह सुसाध्य करने के लिए बोर्ड समर्थन दे सकता है। इन शहरों में नारियल उत्पादों के विपणन के लिए नारियल उत्पादक कंपनियों को सुसज्जित कराने के लिए नारियल उत्पादक कंपनियों का कंसोर्शियम बनाया जा चुका है। अब इन उत्पादक कंपनियों को बड़े पैमाने पर विनिर्माण और विपणन शुरू करना चाहिए। विपणन का यह सफर अकेले घरेलू बाज़ारों के अन्वेषण से पूरा नहीं होगा। हमें नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार का भी पता लगाना होगा। बोर्ड नारियल एवं नारियल उत्पादों के लिए निर्यात संवर्धन परिषद के रूप में कार्य कर रहा है। निर्यातकों को निर्यात स्थानों के खाद्य प्रसंस्करण नियमों और विनियमों की जानकारी हासिल करनी होगी और प्रसंस्करण स्तर पर ही निर्यात गुणवत्ता मानदंडों का सख्त अनुपालन सुनिश्चित करना होगा। यह निर्माण क्षेत्र में हमारी ताकत और क्षमता दर्शाने का एक ज़रिया बनेगा। विश्वभर के विकसित देशों के प्रमुख बाज़ारों का पता लगाने के लिए हमारे नारियल उत्पादक कंपनियों और भारतीय उद्यमियों को पूरी तरह सुसज्जित बनाना चाहिए।

ये सारी गतिविधियों की सफलता के लिए बाहरी संपर्क और विस्तार अनिवार्य मुद्दे हैं। हमें आकाशवाणी और देशभर के कृषि प्रकाशनों की सेवाओं का लाभ उठाकर विस्तार गतिविधियों के लिए कृषक समूहों के माध्यम से अभिनव तंत्र बनाना होगा। इस प्रयोजन के लिए नारियल उत्पादक कंपनियों के कंसोर्शियम को अपने बीच एक भरोसेमंद विस्तार विंग विकसित करने की ज़रूरत है।

विपणन विभाग की गतिविधियाँ अधिक पेशेवराना अंदाज़ में व्यापक और मज़बूत बनाना चाहिए। नारियल उत्पादों की स्थान विशेष ज़रूरतों के आधार पर बाज़ार सर्वेक्षण आयोजित करना चाहिए। विभिन्न प्रकार के उपभोक्ताओं के बीच नारियल उत्पादों के बारे में समुचित, लक्ष्योन्मुख जागरूकता पैदा करने लिए प्रचार विभाग को भी प्रयत्नरत रहना चाहिए। प्रदर्शनियों में सहभागिता और समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित करना जैसे कार्य भी प्रचार विभाग की देखरेख में होना चाहिए। प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थानों के सहयोग से बाज़ार अनुसंधान और बाज़ार सर्वेक्षण चलाया जा सकता है। नारियल के कीटों और रोगों के प्रबंधन एवं रोकथाम हेतु आयुर्वेद की संभावनाओं का भी पता लगाया जा सकता है। आयुर्वेद के तीन उप विभाग हैं-आयुर्वेद मनुष्य के लिए, आयुर्वेद जानवरों के लिए और आयुर्वेद वनस्पति के लिए, याने वृक्ष आयुर्वेद। हम ने नारियल पर कोई भी अनुसंधान वृक्ष आयुर्वेद के आधार पर अभी तक नहीं चलाया है। नारियल प्रौद्योगिकी मिशन को जड़मुर्झा रोग जैसे नारियल के गंभीर और घातक रोगों के निवारणोपाय ढूँढ़ने के लिए वृक्ष आयुर्वेद की संभावनाओं का पता लगाना चाहिए।

नारियल उत्पादक कंपनियाँ प्रभावी और कार्यक्षम रूप में कैसे चलायी जा सकती हैं इसपर गंभीरता से सोच-विचार करना चाहिए। अब जब त्रिस्तरीय कृषक समूहों ने कार्य शुरू किया है तो नारियल किसानों को नारियल के भाव में लगातार हो रही गिरावट से बाहर निकलने के उपायों के बारे में सोचना चाहिए। कृषक उत्पादक संगठनों की सफलता के लिए प्रभावी नेतृत्व के साथ तकनीकी एवं प्रबंधकीय कौशल और प्रभावी टीम वर्क अनिवार्य है। हमें विविध संस्थानों के तकनीकी और प्रबंधन विशेषज्ञों के साथ कृषक उत्पादक संगठनों की एक सशक्त टीम बनानी चाहिए। आगे नारियल उत्पादक संघों और कंपनियों को इस प्रकार की टीम तैयार करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। प्रभावी और कार्यक्षम टीम बनाने के लिए हम एक साथ कार्य करें और भारत में नारियल किसानों के उज्ज्वल भविष्य के लिए नारियल प्रौद्योगिकी मिशन द्वारा उत्पन्न अवसरों का फायदा उठाएं।

शुभकामनाओं सहित,

टी के जोस

**टी.के.जोस**
**अध्यक्ष**

# नारियल उत्पादक समूह-किसानों की समस्याओं को सुलझाने के लिए अहम मंच

**ज्ञानदेवन आर.**
उप निदेशक, नाविबो, कोची-11

12वीं पंच वर्षीय योजना अवधि के दौरान नारियल विकास बोर्ड की अहम गतिविधियों में एक मुख्य पहल था कृषक समूहों के ज़रिए असंगठित नारियल किसानों को संगठित कराना । गत चार वर्षों से बोर्ड नारियल उत्पादक संगठनों का गठन सुसाध्य कराने के साथ साथ इसके लिए सहारा भी बनकर खड़ा रहा है। बोर्ड की कड़ी मेहनतों के फलस्वरूप नारियल किसानों, खासतौर पर छोटे और सीमांत किसानों को कृषक समूहों में एकजुट कराने का सपना साकार हुआ। किसानों को, विशेषतया देश के छोटे किसानों को खुद मालिक बनाते हुए उत्पादक संगठन गठित करने का प्राथमिक लक्ष्य है उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाना, आर्थिक रूप से लाभकर प्रसंस्करण करके उत्पाद विकसित करना और इनके विपणन को बढ़ावा देकर नारियल खेती की लाभदायिकता बढ़ाना। कृषक समूहों को और सशक्त बनाकर उत्पादकता के लिए प्रौद्योगिकी हासिल करने, व्यवहार्य उत्पादों का मूल्यवर्धन करने और बाज़ार गठबंधन बनाने जैसी आगे की कड़ियों तक उनकी पहुँच सुसाध्य कराना होगा। सहभागी किसानों को समुचित उत्पादन एवं संरक्षण प्रौद्योगिकियों की पहचान कराने में आवश्यक समर्थन प्रदान किया जाएगा। ताकि वे अपनी ज़रूरतों के मुताबिक कृषि आदान सामग्रियों का उपयोग करके और अपने बागानों के लिए उपयुक्त अंतराफसलों की खेती करके उत्पादन बढ़ा सकें। नारियल किसानों को सबसे पहले स्तर पर कृषक उत्पादक समितियों, मध्यम स्तर पर कृषक उत्पादक फेडरेशन और उच्च स्तर पर कृषक उत्पादक कंपनियों के रूप में त्रिस्तरीय कृषक समूहों में संगठित किया जाता है, इससे बाज़ार में उत्पाद बेचने और खरीदने के साथ साथ सौदा करने की भी उनकी क्षमता बढ़ जाएगी।

## कृषक उत्पादक समूहों की उत्पत्ति

नारियल विकास बोर्ड ने वर्ष 2011-12 के दौरान केरल में नारियल उत्पादक समितियों का गठन शुरू किया था और उसी वर्ष 112 समितियाँ गठित हुईं। केरल के सभी जिलों में नारियल उत्पादक समितियों का गठन त्वरित गति से होने लगा और 2012-13 के दौरान 1158 नारियल उत्पादक समितियाँ बन गईं। वर्ष 2013-14 में तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में नारियल उत्पादक समितियाँ गठित हुई और केरल में नारियल उत्पादक समितियों को समन्वित करते हुए नारियल उत्पादक फेडरेशनों का गठन होने लगा। वर्ष 2013-14 में ही नारियल उत्पादक कंपनियों का गठन शुरू हुआ और देश में 17 नारियल उत्पादक कंपनियाँ स्थापित हुईं।

नारियल विकास बोर्ड वर्ष 2014-15 में असम, ओड़िशा, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल जैसे गैर पारंपरिक क्षेत्रों

में भी कृषक समूहों के गठन को बढ़ावा देने में अग्रसर है। फिलहाल 42 नारियल उत्पादक कंपनियाँ पंजीकृत हुई हैं और किसानों की कुल 25 करोड़ शेयर पूँजी के साथ ये कंपनियाँ प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों जैसे, केरल (26), तमिलनाडु (6), कर्नाटक (6) और आंध्र प्रदेश (3) में कार्यरत हैं। अन्य कंपनियों से भिन्न नारियल उत्पादक कंपनियाँ किसानों के लिए किसानों द्वारा गठित कंपनियाँ हैं जिनके मालिक खुद किसान हैं। कंपनी के मालिक प्राथमिक नारियल उत्पादक या किसान है। ये कंपनियाँ अन्य निजी लिमिटेड कंपनियों के समान ही कार्य करती हैं और एकमात्र अंतर यह है कि कंपनी का लाभ वापस किसानों को ही प्राप्त होता है जो कंपनी के मालिक भी हैं। ये कृषक उत्पादक संगठन किसानों को उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन में विविध सेवाएं उपलब्ध कराते हुए आर्थिक रूप से व्यवहार्य, लोकतंत्रीय और स्वशासित कृषक उत्पादक संगठनों के रूप में कार्य करते हैं।

### कृषक उत्पादक संगठन- कार्यान्वयन एजेंसियाँ

नारियल उत्पादक समूह सरकारी एजेंसियों द्वारा कार्यान्वित किए जा रहे विविध विकासात्मक कार्यक्रमों की कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में कार्य कर सकते हैं। केन्द्रीय और राज्य सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के अंतर्गत लाभान्वित होने के लिए कृषक उत्पादक संगठन की योग्यता की सबसे प्रमुख कसौटी है कि यह किसानों द्वारा पंजीकृत और शासित निकाय होना चाहिए जो उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन एवं संबंधित अन्य गतिविधियों पर ध्यान केन्दित करता हो। इसके लिए केन्द्रीय और राज्य सरकारों तथा उनकी एजेंसियों द्वारा कृषक उत्पादक संगठनों को अत्यंत प्रोत्साहन और समर्थन दिया जाएगा। कृषि क्षेत्र से संबद्ध एजेंसियों में केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित एवं राज्य सरकार द्वारा वित्तपोषित योजनाओं के अंतर्गत वित्तीय स्रोतों का उपयोग किया जाएगा। कृषि विकास से जुड़े राज्य और केन्द्र सरकारी एजेंसियों के बीच बेहतर संबंध स्थापित करने पर ही यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा।

नारियल विकास बोर्ड वर्ष 2013-14 से लेकर इन कृषक समूहों के ज़रिए नारियल बागों का पुनर्रोपण एवं पुनरुज्जीवन, निदर्शन प्लोटों की स्थापना और जैव खाद इकाइयों की स्थापना आदि योजनाएं कार्यान्वित कर रहा है। योजना के अंतर्गत लाभभोगियों का चयन, आवेदनों का संचयन, क्षेत्र का सत्यापन, वित्तीय सहायता की सिफारिश और कृषि आदान सामग्रियों का वितरण कृषक उत्पादक संगठनों द्वारा किया जाता है।

### नारियल बीजपौधों का उत्पादन और वितरण

किसानों की भारी मांग को पूरा करने हेतु गुणवत्तापूर्ण बढ़िया रोपण सामग्रियों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्तायुक्त बढ़िया बीजपौधों के उत्पादन और वितरण पर बोर्ड अत्यधिक ज़ोर दे रहा है। यह किसानों को झुलसाने वाली समस्याओं में एक है। नाविबो और राज्य एवं केन्द्रीय एजेंसियों द्वारा पौधों का उत्पादन मांग के अनुसार नहीं हो पा रहा है और इन स्रोतों से कुल मांग के मात्र 35 प्रतिशत की ही आपूर्ति हो पा रही है। इसलिए बोर्ड कृषक उत्पादक संगठनों के ज़रिए विकेन्द्रीकृत रूप में नारियल नर्सरियाँ पाल कर भरोसेमंद वैकल्पिक स्रोत को बढ़ावा देना चाहता है जहाँ से किसान भाई आसानी से बीजपौध खरीद सकते हैं। नारियल उत्पादक फेडरेशन अपनी नर्सरियाँ लगाकर अपने अधीन कार्यरत नारियल उत्पादक समितियों को बढ़िया किस्म की रोपण सामग्रियाँ उपलब्ध कराने का दायित्व अपने कंधों पर ले सकते हैं।

वर्ष दर वर्ष विकेन्द्रीकृत नर्सरियों की संख्या बढ़ती जा रही है। 2015-16 के दौरान इन नर्सरियों से तीन लाख से भी अधिक गुणवत्तापूर्ण नारियल बीजपौधों के उत्पादन का अंदाज़ा लगाया गया है। नारियल विकास बोर्ड इन नर्सरियों को उनके कार्यनिष्पादन के आधार पर प्रमाणित करने का प्रस्ताव रखा है और ये भविष्य में गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों का स्थायी स्रोत बन जाएंगे। यह बेहतर उत्पादकता और गुणवत्ता के लिए केवल रास्ता ही नहीं बनाएगा बल्कि किसानों के दिलों में स्वामित्व की भावना भी जगाएगी।

### प्रसंस्करण और विपणन गतिविधियाँ

कच्ची सामग्रियों की उपलब्धता के आधार पर आर्थिक रूप से वांछित नारियल

उत्पादों के रूप में उत्पाद विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए कृषक उत्पादक संगठनों को नारियल प्रसंस्करण इकाइयाँ शुरू करनी चाहिए। कच्ची सामग्रियों का प्रापण सदस्य किसानों से सुनिश्चित की जा सकती है। बोर्ड के तकनीकी और वित्तीय समर्थन से प्रसंस्करण हेतु उचित सुविधाएं बनायी जा सकती हैं। बढ़िया एफएक्यू खोपरा, नारियल चिप्स, नीरा और नीरा आधारित उत्पादों का उत्पादन, सिरका, वर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर इकाइयाँ, नारियल का रेशा निकालने की इकाइयाँ और नारियल के अवशिष्टों का उपयोग करके खुंबी की खेती आदि मूल्यवर्धित उत्पाद आधारित ऐसी कुछ प्रसंस्करण गतिविधियाँ हैं जो कृषक उत्पादक संगठनों के ज़रिए चलाई जा सकती हैं।

कृषक उत्पादक संगठन किसानों, प्रसंस्करणकर्ताओं, व्यापारियों और खुदरे व्यापारियों के बीच की कड़ी के रूप में कार्य कर सकते हैं ताकि मांग और आपूर्ति के बीच समन्वयन स्थापित कर सकें और नारियल उत्पादों संबंधी बाज़ार सूचनाएं, कृषि आदान सामग्रियों की अपूर्ति और निर्यात जैसी मुख्य व्यापार विकास सेवाओं में उनकी पहुँच भी बनी रहे। कृषक उत्पादक संगठन अपने सदस्य किसानों से नारियल के अलावा अन्य कृषि उत्पाद भी जुटा सकते हैं, इसका भंडारण, मूल्यवर्धन और पैकिंग गतिविधियाँ भी चला सकते हैं। कृषि उत्पादों को जुटाने के बाद कृषक उत्पादक संगठन इसका सीधा विपणन भी कर सकते हैं। इससे किसान समय की बरबादी, आदान-प्रदान की लागत, तोलन से नुकसान, तंगी बिक्री, भाव में उतार-चढ़ाव, परिवहन, गुणवत्ता रखरखाव जैसे मामलों से बच सकते हैं।

नारियल विकास बोर्ड ने प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों में बड़ी संख्या में किसानों का त्रिस्तरीय समूह बनाया है। इन समूहों को सदस्य किसानों से कृषि उत्पादों का प्रापण और विपणन करने, बीजफल, उर्वरक, मशीनरी जैसी कृषि आदान सामग्रियों की आपूर्ति करने, बाज़ार के साथ संबंध बनाए रखने, प्रशिक्षण एवं नेटवर्किंग और वित्तीय एवं तकनीकी परामर्श देने जैसी गतिविधियाँ चलाने के मंच के रूप में कार्य करना चाहिए। भाव की गिरावट के समय न्यूनतम समर्थन भाव के अंतर्गत मूल्य समर्थन गतिविधियाँ चलाने के लिए प्रापण एजेंसी के रूप में भी वे कार्य कर सकते हैं। कृषक उत्पादक संगठनों को उन्नत कृषि रीतियाँ अपनाने, बाज़ार सूचना तंत्र बरकरार रखने, कृषि उत्पादन में जानकारी एवं कुशलता स्तर बढ़ाने और उत्पादों का मूल्य बढ़ाने के लिए फसल तुड़ाई उपरांत प्रसंस्करण कार्यों को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए।

## अन्य गतिविधियाँ

उभरती मांगों के आधार पर कृषक उत्पादक संगठन समय समय पर नई सेवाएं शुरू करते रहेंगे। उनकी सेवाओं में वित्तीय, व्यापारिक और कल्याण सेवाएं शामिल हैं। नारियल उत्पादक कंपनियाँ मज़बूत स्थिति पर पहुँचने के बाद अपने सदस्यों के लिए वित्तीय सेवाएं भी प्रदान कर सकती हैं। समय के चलते, कृषक उत्पादक संगठन फसल, ट्रैक्टर और पंप सेट की खरीद, कुँए का निर्माण और पाइपलाइन लगाने के कार्य के लिए ऋण की व्यवस्था कर सकते हैं। कृषक उत्पादक संगठन कम दाम में गुणवत्तापूर्ण कृषि आदान सामग्रियाँ, उर्वरक, कीटनाशी, बीजफल, स्प्रेयर, पंप सेट, सहायक सामग्रियाँ, पाइप लाइन आदि सदस्य किसानों को उपलब्ध करा सकते हैं।

आज की उदारीकृत अर्थव्यवस्था में नारियल उत्पादक कंपनियों का आशाजनक भविष्य सर्वथा संभव है। अपनी सामूहिक शक्ति से वे ऊपर उल्लिखित अनुसार विविध गतिविधियाँ चला सकते हैं। किंतु कंपनी के सदस्यों का रवैया पूरी तरह बदलना होगा ताकि इनकी गतिविधियों की सभी पहलुओं में एक नई सहकारी भावना सुनिश्चित की जा सके। कंपनी के सदस्यों को इस बात पर अधिक ध्यान देना होगा कि सामूहिक प्रयास से ज़रूरतों को पूरा किया जा सके। कंपनी के प्रबंधन पैटर्न में काफी पेशेवर और प्रबंधन कुशलता रखने वाले लोग होने चाहिए।

# नारियल के प्रोडक्ट बास्कट

**सीडीबी न्यूज़ ब्यूरो**

नारियल किसानों को स्थायी और किफायती आय सुनिश्चित करने के लिए नारियल से मूल्यवर्धित उत्पाद बनाना और उनका विपणन सुगम बनाना नारियल विकास बोर्ड अत्यावश्यक मानते हैं। इसके लिए नाविबो ने बारहवीं पंचवर्षीय योजना अवधि में विविध प्रकार के नारियल उत्पाद देशी और विदेशी बाज़ारों में पहुँचाने की योजना बनायी है।

सबसे पहले देश के नगरों और महानगरों में नारियल के विविध प्रकार के मूल्यवर्धित उत्पाद वहाँ उत्पन्न माँग की पूर्ति के अनुसार अपेक्षित मात्रा में उपलब्ध कराना है। प्रमुख नगरों में मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों की माँग का पता लगाकर उसकी जानकारी उत्पादों के निर्माताओं तक सही समय पर पहुँचाना अत्यंत आवश्यक है। प्रमुख नगरों के बाज़ारों को लक्षित करके बोर्ड ने मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों की उत्पाद टोकरी (प्रोडक्ट बास्कट) पेश की है। इसमें गोल खोपरा, शोषित नारियल, नारियल दूध पाउडर, नारियल तेल, वर्जिन नारियल तेल, पैकटबंद डाब पानी, नारियल सिरका, नीरा और नारियल शक्कर शामिल है।

**पैकटबंद डाब पानी**

नारियल विकास बोर्ड तथा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला ने मिलकर डाब पानी पाउचों तथा एल्यूमिनियम कैनों में पैक करने की तकनीक विकसित की है। इस तकनीक के अनुसार पैकटबंद करने पर सामान्य तापमान में तीन महीने तक और प्रशीतित स्थिति में छः महीने तक डाब पानी का सहज स्वाद नष्ट नहीं होता है। अब ओड़िशा, गुजरात, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल में स्थित इकाइयाँ पैकटबंद डाब पानी बनाती हैं।

## डेस्सिकेटेड नारियल

नारियल गरी पीसकर यंत्र की सहायता से नमी 3 प्रतिशत से कम होने तक सुखाकर डेस्सिकेटेड नारियल बनाया

जाता है। इसका रंग सफेद है। मिठाई तथा खाद्य उद्योग में इस उत्पाद की बड़ी मांग है।

## नारियल दूध/क्रीम

नारियल को कद्दुकस करके निचोड़कर नारियल दूध तैयार किया जाता है। नारियल दूध का सबसे गाढ़ा रूप है नारियल क्रीम। नारियल विकास बोर्ड तथा तिरुवनंतपुरम में स्थित क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला ने संयुक्त रूप से निर्जलीकृत रूप में नारियल दूध तैयार

करने की तकनीक विकसित की है। यह उत्पाद अधिक दिनों तक खराब नहीं होता है। दस हज़ार नारियल से 2500 किलोग्राम नारियल दूध तथा 500 किलो ग्राम क्रीम मिलता है।

## स्प्रे ड्राइड नारियल दूध पाउडर

नारियल दूध से पूरी तरह नमी निकालकर नारियल दूध पाउडर बनाया जाता है। स्वाभाविक रूप और स्वाद में यह उत्पाद महीनों तक रखा जा सकता है। नारियल विकास बोर्ड तथा केन्द्रीय खाद्य अनुसंधान संस्थान ने संयुक्त रूप में इसकी प्रौद्योगिकी विकसित की है। नारियल दूध में कुछ स्वीकार्य रासायनिक तत्व मिलाए जाते हैं और वसा की मात्रा अपेक्षानुसार रखी जाती है। इसके बाद पास्चुरैसेशन और स्प्रे ड्राई करने के बाद पैक किया जाता है। पानी में घोलकर नारियल दूध के बदले इसका उपयोग किया जाता है।

## वर्जिन नारियल तेल

कच्चे नारियल से विटामिन ई से भरपूर वर्जिन नारियल तेल यांत्रिक विधि से या कुदरती तौर पर और गरम करके या बिना गरम करके और वेट प्रोसेसिंग द्वारा भी बनाया जाता है। विटामिन,प्रति ऑक्सीकारक और प्रतिरोध क्षमता प्रदान करने वाला लॉरिक अम्ल इसमें भरपूर निहित है। यह गुरदा और जिगर के लिए अच्छा है। हाइपोथाइरोयिडिसम के लिए अच्छी दवा है। रक्त चाप नियंत्रित करता है। कैंसर का खतरा कम करता है।

## गोल खोपरा

नारियल को 8 से 12 महीने तक छाया में रखा जाता है। नारियल पानी जब पूरी तरह सूख जाता है तथा गरी सूखकर खोपरा बनने लगता है तब सावधानी से नारियल खोपड़ी फोड़कर

खोपरा निकाला जाता है। यह खोपरा मीठा तथा सफेद होता है। गोल खोपरे के लिए बाज़ार में अच्छा दाम मिलता है। ड्राई फ्रूट के तौर पर इसका खूब उपयोग होता है।

## नारियल चिप्स

नारियल चिप्स 9-10 महीने के नारियल से बनाया जाता है। नारियल गरी को नरम काटकर शक्कर की घोल में रखने के बाद ऑवन से या यॉंत्रिक विधि से सुखाकर उससे नमी निकाली जाती है।

पैकट खोलकर सीधे खाया जा सकता है। छः महीने तक यह कुरकुरे चिप्स खराब नहीं होता है। कासरगोड़ स्थित केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान केन्द्र ने नारियल चिप्स बनाने की विधि विकसित की है।

## नारियल सिरका

नारियल पानी से सिरका जेनरेटर द्वारा सिरका बनाया जाता है। नारियल पानी में शक्कर मिलाकर पुष्ट करके, यीस्ट तथा मदर सिरका मिलाकर किण्वन, ऑक्सीकरण तथा अम्लीकरण करके सिरका बनाया जाता है। अचार उद्योग में प्रिज़रवेटिव के रूप में तथा स्वाद बढ़ाने के लिए खाना प्रसंस्करण उद्योग में इसका उपयोग किया जाता है।

## नारियल तेल

ह्रस्व और मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल नारियल तेल के मुख्य घटक होने की वजह से नारियल तेल सबसे बढ़िया खाद्य तेल माना जाता है। नारियल तेल जल्दी पिघलता है। ऑक्सीकरण का प्रभाव इस पर धीरे होता है और फलस्वरूप यह जल्दी खराब नहीं होता है। इसकी महक और आसानी से पचने की विशेषताएं खाद्य उद्योग में इसकी मांग बढ़ा दी है। पैकटबंद नारियल तेल की मांग बाज़ार में अत्यधिक है।

## नीरा

अपक्व, अनखुले नारियल पुष्पगुच्छ से जो रस इकट्ठा किया जाता है उसे ताज़े रूप में नीरा कहा जाता है। यह गैर-अल्कहॉलिक, स्वास्थ्यवर्धक पेय नीरा और इसके मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन से रोजगार सृजन हो जाता है तथा किसानों के लिए बेहतर आय प्राप्त हो जाती है। यह स्वादिष्ठ स्वास्थ्य पेय और शर्कराओं, खनिजों तथा विटामिनों का समृद्ध स्रोत है। यह मीठी, सीपी सा सफेद और निमर्ल है। नारियल पेड़ से उतारती नीरा को छानकर पास्तुरीकरण करके उसमें जैव परिरक्षक मिलाया जाता है। उपचारित नीरा अंतरिक्ष तापमान में 2 महीने तक कैनों में परिरक्षित रखा जा सकता है। नीरा से गुड़, शक्कर, सिरप, शहद आदि मूल्यवर्धित उत्पाद बनाए जाते हैं।

## नारियल शर्करा

नारियल सिरप या गुड़ को रवेदार बनाकर महीन दानेदार नारियल शर्करा बनाया जा सकता है। विश्व बाज़ार में नारियल गुड़ से बने नारियल शर्करा की अधिक स्वीकार्यता है। नारियल गुड़ में 15 प्रतिशत शर्करा निहित है।

इस शर्करा के महत्वपूर्ण स्वास्थ्य गुण जैसे कि कम ग्लैसेमिक इंडेक्स और उच्चतम पोषण संघटन के मद्देनज़र इसकी संभावनाएं अत्यधिक है। स्वीटनर की हैसियत से इसका प्रयोग किया जा सकता है विशेषकर तब, जब उच्च फ्रक्टोस संघटन की वजह से दूसरे स्वीटनरों को अस्वीकार किया जाता है। यह वैकल्पिक शर्करा उद्योग 13 लाख डॉलर का है इसलिए बाज़ार संभावनाएं अत्यधिक है। इंडोनेशिया जैसे प्रमुख उत्पादक देश प्रति महीने 50,000 मेट्रिक टन तथा प्रति वर्ष 6 लाख मेट्रिक टन नारियल शर्करा का उत्पादन करता है। इंडोनेशिया में इसकी स्थानीय मांग भी अधिक है।

# कृषक उत्पादक संगठन-नारियल किसानों की नई उम्मीद

**सीडीबी न्यूज़ ब्यूरो**

भारत के प्रमुख वाणिज्यिक फसलों में नारियल का अहम स्थान है। हमारे देश में नारियल की ज्यादातर खेती छोटे और सीमांत खेतों में हो रही है। यद्यपि एपीसीसी सदस्य देशों में नारियल उत्पादन में भारत अव्वल स्थान पर है, फिर भी अपनी क्षमता के मुकाबले यहाँ नारियल उत्पादन कम होता है। क्षमता के मुताबिक उत्पादन न होने के कई कारण हैं। इनमें से सबसे प्रमुख है इधर-उधर बिखरे पड़े खेत, कीट एवं रोग, भाव का उतार-चढ़ाव, अस्थिर बाज़ार, वैज्ञानिक खेती प्रणालियों का अभाव, सिंचाई सुविधाओं का अभाव आदि। इससे भी अधिक गंभीर समस्या है नारियल कृषकों का अव्यवस्थित और असंगठित व्यवहार। इन कारणों से नारियल किसानों को अपने छोटे और सीमांत खेतों से इतनी कम आमदनी प्राप्त होती है कि वे अपने परिवार की जीविका चलाने में असमर्थ हो जाते हैं। इधर-उधर बिखरे पड़े खेतों में संसाधनों का प्रभावी उपयोग और बेहतर प्रौद्योगिकियों का स्वीकरण काफी मुश्किल है। छोटे और सीमांत खेतों में उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए सामूहिक रूप से प्रबंधन प्रणालियां अपनाना अपेक्षित है ताकि छितरे पड़े खेतों की कमज़ोरियों को ताकत में बदलाया जा सके।

कृषक उत्पादक संगठन जो सामूहिक रूप से गठित हो रहे हैं, नारियल किसानों को खासतौर पर छोटे किसानों को, इस क्षेत्र की चुनौतियों का सामना करने का रास्ता दिखाते हैं। छोटे और सीमांत खेतों की मौजूदा उत्पादकता स्तर सुधारने के लिए बोर्ड ने नारियल उत्पादक समितियों के रूप में कृषकों के सामूहिक एकत्रीकरण पर ध्यान केन्द्रित किया है। कृषक उत्पादक संगठनों के सदस्य

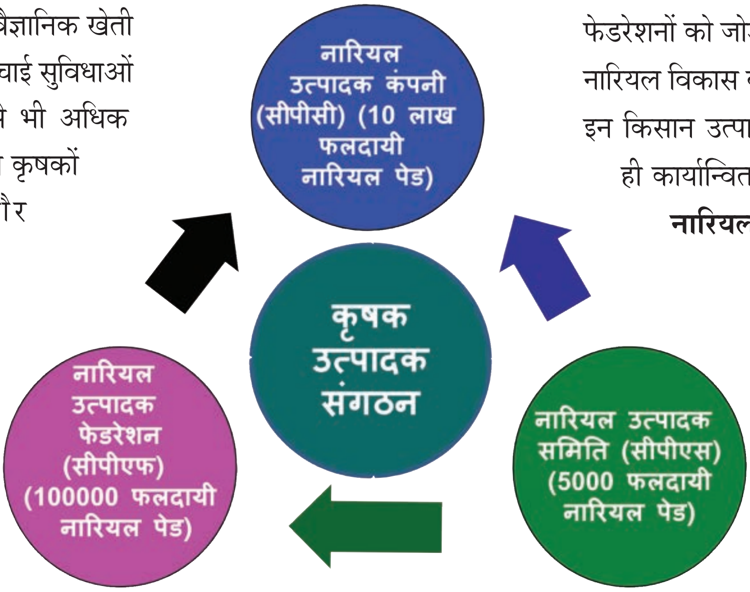


नारियल उत्पादकता सुधार कार्यक्रमों के कार्यान्वयन को सामूहिक रूप से बढ़ावा दे सकते हैं। संगठित रहने से किसानों की क्रय-विक्रय शक्ति बढ़ती है और उच्च मूल्य बाज़ार में अपनी पहचान बनती है और निजी संस्थाओं के साथ उचित निबंधनों पर नई साझेदारी शुरू कर सकते हैं।

नारियल विकास बोर्ड ने नारियल किसानों का त्रिस्तरीय संगठन बनाया है। इसके सबसे पहले स्तर पर नारियल उत्पादक समितियाँ हैं जिसमें निकटवर्ती क्षेत्र के किसानों को एक छत के नीचे लाकर संगठित किया जाता है। मध्यम स्तर नारियल उत्पादक फेडरेशनों का है जो 10 से 15 समितियों को मिलाकर बनाया जाता है। सबसे ऊँचे स्तर पर नारियल उत्पादक कंपनियाँ हैं जो तकरीबन 10 नारियल उत्पादक फेडरेशनों को जोड़कर बनाया जाता है। नारियल विकास बोर्ड की सारी योजनाएं इन किसान उत्पादक संगठनों के द्वारा ही कार्यान्वित की जाएंगी।

**नारियल उत्पादक समिति**

नारियल किसान असंगठित और छोटे एवं सीमांत श्रेणी के होने के कारण उत्पादनक्षमता तथा खेतीगत आमदनी बढ़ाने में प्रायः नाकामयाब रहे हैं। यदि छोटे एवं सीमांत किसान एकजुट होकर कार्य करें तो खेती से जुड़े कार्यकलाप अधिक सफल हो सकते हैं। इसी के मद्देनज़र नारियल विकास बोर्ड ने नारियल उत्पादक समितियाँ बनाने हेतु किसानों को प्रोत्साहन देने का कदम उठाया है। वे किसान जिनके पास कम से कम 10 फलदायी नारियल पेड़ हैं,

नारियल उत्पादक समिति के सदस्य बन सकते हैं। समिति में निकटवर्ती क्षेत्र के 40 से 100 किसान सदस्य बनेंगे और प्रत्येक समिति के पास 4000-5000 फलदायी पेड़ उपलब्ध होंगे। यह भी प्रत्याशित है कि ऐसी समितियों के गठन के साथ नारियल का भंडारण-प्रसंस्करण-विपणन जैसे कार्य भी प्रभावी ढंग से मुम्किन हो पाएगा। बोर्ड छोटे और सीमांत कृषकों को एक छत के नीचे लाकर उनको चैरिटबिल सोसाइटी अधिनियम के अधीन पंजीकृत करवाने के बाद बोर्ड के साथ पंजीकृत कराते हैं।

**समिति के लक्ष्य**

- समिति के दायरे में आने वाले नारियल किसानों का समग्र आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नयन के लिए कार्य करना।
- सदस्यों और परिवार वालों के सांस्कृतिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्यपरक और स्वच्छ जीवन शैली उन्नत बनाना और समिति के सदस्यों के कल्याण के लिए उचित रूप में कार्य करना।
- नारियल से जुड़े क्षेत्र में अनुसंधान में लगी अनुसंधान विकास संस्थाओं के सहयोग से अनुसंधान कार्य करना, प्रदर्शनियों एवं अध्ययन दौरों में हिस्सा लेना।
- उत्पादन, भंडारण, प्रसंस्करण, विपणन आदि से संबंधित नूतन प्रौद्योगिकियाँ समिति के सदस्य कृषकों तक पहुँचाना।
- कृषि विभाग एवं कृषि अनुसंधान संस्थानों की सलाह के अनुसार खेती प्रणालियाँ अपनाना।
- छोटे कृषकों के खेतों की उत्पादन क्षमता बढ़ाना, भंडारण, प्रसंस्करण, विपणन आदि के द्वारा कृषकों की आमदनी बढ़ाना और इन कृषकों को नारियल विकास बोर्ड के साथ जुड़ाने वाली श्रृंखला की कड़ी के रूप में कार्य करना।
- बेहतर और सक्षम कृषि तकनीक अपनाकर खेती से जुड़े खर्च कम कराना।
- समिति के सदस्यों को बढ़िया रोपण सामग्रियाँ उपलब्ध कराना।
- कृषकों को खाद एवं खेती उपस्कर उचित दाम पर उपलब्ध कराना।
- नारियल की गुणवत्ता बढ़ाने तथा प्रथमिक प्रसंस्करण के लिए आवश्यक कार्य करना।
- सदस्य कृषकों से नारियल एकत्र करके थोक व्यापार करना।
- उत्पाद विविधीकरण और मूल्यवर्धन के लिए आवश्यक कदम उठाना।
- सरकार, क्षेत्रीय स्वशासित संस्थान, अनुसंधान संस्थान, विश्वविद्यालय, शैक्षिक संस्थान, गैर सरकारी एजेंसियाँ आदि के साथ बेहतर संबंध बनाए रखना।
- इनके लक्ष्यों को साकार करने लिए प्रवेश शुल्क, ग्राहकी, सरकारी एजेंसियों की सब्सिडी, अनुदान, विविध आर्थिक संस्थानों से उधार लेना आदि जैसे उपायों से आवश्यक निधि जुटाना।

**उत्पादक समितियों के ज़रिए कृषकों को प्राप्त अवसर**

- कृषकों को अपने बागों में वैज्ञानिक प्रणालियाँ अपनाने के लिए सक्षम बनाया जाता है।
- उत्पादन, पौधा संरक्षण, प्रसंस्करण, विपणन आदि से जुड़े नूतन उपाय सीखने का अवसर।
- एक साथ कार्य करते हुए कृषीय खर्च कम करने का अवसर।

- अच्छी गुणवत्ता की रोपण सामग्रियाँ, खाद, कीटनाशी, खेती उपस्कर उचित दाम पर अर्जित करने का अवसर।
- छोटे-मध्यम स्तर की नर्सरियाँ शुरू करने का अवसर।
- जैव खाद बनाने की इकाइयाँ, खोपरा ड्रायर आदि स्थापित करने के लिए आर्थिक सहायता।
- नारियल उत्पादों के विपणन के लिए भरपूर अवसर।
- अध्ययन दौरे का अवसर
- नीरा का उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन का अवसर।

**भविष्य की संभावनाएं**

- नारियल प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने हेतु तकनीकी एवं आर्थिक सहायता प्राप्त करने के मामले में नारियल उत्पादक समिति के सदस्यों को वरीयता दी जाएगी।
- उनको अपने उत्पादों के विपणन के लिए बेहतर अवसर प्राप्त होगी।
- समितियों को एकत्रित करके गठित संघों द्वारा मध्यम दर्जे की प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने का अवसर
- नारियल उत्पादक समितियों, उनके संघों और उत्पादक कंपनियों के ज़रिए नारियल और नारियल आधारित उत्पादों के निर्यात का अवसर
- सरकार की मूल्य समर्थन योजना के अंतर्गत खोपरा/नारियल के प्रापण के लिए मान्यता प्राप्त एजेंसी के रूप में कार्य करना

- नारियल उत्पादक समितियों और इनके संघों की साझेदारी में उत्पादक कंपनियाँ बनाने का अवसर
- ये कंपनियाँ बोर्ड की तकनीकी एवं वित्तीय सहायता का लाभ उठाकर उन परियोजनाओं में, जिसके लिए उच्च पूँजी की ज़रूरत होती है, निवेश कर सकते हैं।

प्रत्येक समिति का प्रचालन क्षेत्र प्राकृतिक/भौगोलिक सीमा से(जैसे सड़क, नाला, नदि आदि से) अलग होना चाहिए। चैरिटेबिल सोसाइटी अधिनियम के अधीन समिति का पंजीकरण होना चाहिए। प्रवेश शुल्क 100 रुपए और वार्षिक ग्राहकी 20 रुपए तय किया गया है।

नारियल उत्पादक समितियाँ बनाने के बाद बोर्ड का लक्ष्य यह रहता है कि नारियल उत्पादक समितियों के पदधारियों का सशक्तिकरण करें जिसके लिए इसके पदधारियों को मशहूर प्रबंधन संस्थानों के सहयोग से प्रशिक्षण दिया जाता है। किसानों की मानसिकता में बदलाव लाते हुए उनका सशक्तिकरण करने में बोर्ड कामयाब हुए हैं। सीपीएस के पदधारियों को नारियल-खोपड़ा-नारियल तेल से परे दूसरे मूल्यवर्धित उत्पादों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया है और नारियल के बहुविध उपयोगों की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया है। नतीजा यह निकला कि नारियल कई औद्योगिक उत्पादों की कच्ची सामग्री बन गई। किसानों को एकसाथ बैठकर

विश्लेषण करके इस उद्योग की अस्थिरता के कारण ढूँढ़ निकालने का अवसर प्राप्त हुआ। नारियल उत्पादक समिति के सदस्यों को सशक्त बनाने लिए नाविबो द्वारा ठोस प्रयास किया जा रहा है।

केरल में परीक्षण आधार पर सितंबर 2011 में नारियल उत्पादक समितियों का गठन शुरू हुआ था। सितंबर 2015 तक मात्र केरल में कुल 6864 नारियल उत्पादक समितियाँ पंजीकृत हुई हैं। अन्य परंपरागत नारियल उत्पादक राज्यों में भी नारियल उत्पादक समितियाँ गठित हो रही हैं। पूरे भारत में अब तक 8068 समितियाँ गठित हुई हैं।

**नारियल उत्पादक फेडरेशन**

नाविबो ने नारियल उत्पादक समितियों को एकीकृत करने की आवश्यकता को बहुत पहले ही जान लिया था, जो नारियल उद्योग का नींव बन सकता है। नारियल उत्पादक समितियों को और अधिक मज़बूत करने तथा प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन संबंधी गतिविधियों को लाभकर बनाने के लक्ष्य से नारियल उत्पादक फेडरेशनों का गठन हुआ। नारियल उत्पादक समिति सदस्यों के साथ तीव्र चर्चा और परामर्श करने के बाद और समिति के पदधारियों के लिए चलाए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के मूल्यांकन के आधार पर 15 से 25 नारियल उत्पादक समितियों को एकत्रित करके नारियल उत्पादक समितियों के फेडरेशन बनाने का निर्णय लिया गया। इसप्रकार फेडरेशन के दायरे में औसतन एक लाख नारियल पेड़ उपलब्ध हो जाते हैं जिससे पर्याप्त मात्रा में उत्पादों का संचयन, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन संभव हो जाता है। यह संगठन नारियल आधारित उद्योग के बुनियादी ढाँचे के रूप में कार्य करेगा।

नारियल उत्पादक फेडरेशन अच्छी गुणवत्ता के खोपरे का प्रापण, डिब्बाबंद डाब पानी, डाब पानी एवं परिपक्व नारियल पानी से बनते पेय, डाब की मुलायम गरी से विभिन्न जायकों में लघु आहार पदार्थ तैयार करना आदि जैसे नारियल आधारित विविध खाद्योत्पादों के उत्पादन पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है। नारियल उत्पादक फेडरेशन अपने सदस्य समितियों के सदस्यों को किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराने की पहल भी कर सकते हैं जिससे किसानों को आसानी से कम ब्याज में समय पर उधार मिल सकता है। इसप्रकार नारियल उत्पादक समितियों के फेडरेशनों के पास नारियल उद्योग की बेहतर प्रगति के लिए कई अवसर उपलब्ध हैं। नारियल के भाव की गिरावट के मद्देनज़र नारियल उत्पादक फेडरेशनों के तत्वावधान में आपातिक आवश्यकता के रूप में आधुनिक खोपड़ा ड्रायर की स्थापना के लिए नारियल विकास बोर्ड 50 प्रतिशत सब्सिडी देता है।

फेडरेशनों के सशक्तिकरण के लिए नारियल उत्पादक समितियों को नूतन आशय और रणनीतियाँ बनानी होंगी। समिति के पास एक डैटा बैंक होना चाहिए जिसमें ताड़ों की संख्या, इसकी किस्म और उत्पादन संबंधी ब्यौरे होने चाहिए। फेडरेशन इन आंकड़ों का संकलन करेंगे और भविष्य का कार्यक्रम तैयार करने के लिए बुनियादी आधार के रूप में इसका उपयोग करेंगे। जैविक उत्पादों के लिए बाज़ार का पता लगाने का कार्य भी इन फेडरेशनों के द्वारा किया जा सकता है। नारियल उत्पादक समितियों और नारियल उत्पादक फेडरेशनों के अंतर्गत आधुनिक खोपरा

ड्रायर की स्थापना, डाब पार्लर की स्थापना, निदर्शन प्लोटों की स्थापना, नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन, नारियल उत्पादों का निर्यात आदि कार्य किया जाता है।

नारियल उत्पादक समिति सदस्यों के नारियल खेतों से उपलब्ध नारियल एकत्रित करके खोपरा बनाने के बाद नारियल तेल उत्पादित करने का कार्य इन फेडरेशनों की देखरेख में हो सकता है। इससे उपभोक्ताओं को किफायती दाम पर गुणवत्तापूर्ण नारियल तेल उपलब्ध हो जाता है। यही नहीं नारियल के विविध मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने लिए एकजुट होकर श्रम करने वाली संस्था के रूप में भी नारियल उत्पादक फेडरेशन कार्य कर सकते हैं। प्रत्येक सीपीएस द्वारा प्रति महीने कितने नारियल का उत्पादन कर सकता है, कौन कौन से मौसम में कितना उतपादन हो सकता है, ज्यादा पैदावार मिलने का समय, प्रत्येक सीपीएस के दायरे में खोपरा, तेल, डाब और बीजफल के रूप में फल लेने योग्य कितने नारियल पेड़ उपलब्ध है आदि जैसे आंकड़े अगर समिति के सदस्य उपलब्ध करा पाएं तो ये जानकारी फेडरेशन स्तर पर एकत्रित करके भविष्य की कार्ययोजनाएं तैयार कर सकती हैं।

नारियल उत्पादक समितियों का कार्य त्वरित गति में चलाने के लिए उनकी देखरेख हेतु फेडरेशनों का गठन भी तेज़ी से हो रहा है। मात्र केरल में अब तक 204 नारियल उत्पादक फेडरेशनों का पंजीकरण हुआ है। अन्य नारियल उत्पादक राज्यों को मिलाकर अब तक कुल 472 नारियल उत्पादक फेडरेशन बोर्ड के साथ पंजीकृत हुए हैं। बोर्ड फेडरेशनों के द्वारा केरल में पुनर्रोपण और पुनरुज्जीवन कार्यक्रम ज़ोरदार रूप से कार्यान्वित करते हैं।

## नारियल उत्पादक कंपनियाँ

उत्पादकों को, खासतौर पर छोटे और सीमांत किसानों को एकत्रित करके उत्पादक कंपनियाँ बनाने से नारियल खेती के क्षेत्र में सामना की जा रही कई चुनौतियों का आसानी से हल निकाल सकते हैं। किसानों द्वारा गठित उत्पादक कंपनियाँ जिसके संचालक खुद किसान हैं, किसानों के लिए गुणकारी हो सकते हैं। इन कंपनियों से यह उम्मीद है कि इनकी सुचारू गतिविधियों से कृषि साधनों का सामूहिक क्रय, सामूहिक विपणन, प्रसंस्करण आदि से आमदनी बढ़ाना, बेहतर कृषि साधनों से उत्पादकता बढ़ाना, किसानों की जानकारी बढ़ाना और गुणवत्ता सुनिश्चित करना आदि संभव हो जाएंगे।

उत्पादक कंपनियों की सुदूर दृष्टि इन बातों पर टिका होना चाहिए कि कार्यक्षम, लागत प्रभावी और टिकाऊ संसाधनों का उपयोग करके उत्पादकता में वृद्धि लाने हेतु सदस्य किसानों को सक्षम बनाएं और सरकारों, शैक्षिक संस्थानों, अनुसंधान एजेंसियों, नागरिक समितियों एवं निजी क्षेत्रों की प्रभावी साझेदारी से नारियल क्षेत्र की प्रगति सुनिश्चित करें। ये उत्पादक कंपनियाँ नारियल की खेती, फार्म उत्पादों का संचयन, नारियल उत्पादक समितियों/ फेडरेशनों के स्तर पर प्राथमिक प्रसंस्करण, बेहतर उत्पादकता हेतु वैज्ञानिक प्रबंधन प्रणालियाँ अपनाने के लिए कृषकों की मदद करना, अच्छी गुणवत्ता के खोपरे, नारियल तेल आदि बनाना और नारियल के छिलके, खोपड़ी, नारियल पानी आदि उपोत्पादों के प्रभावी

इस्तेमाल से किसानों की आमदनी में वृद्धि करना आदि सभी पहलुओं की देखरेख करती हैं। ये कंपनियाँ कच्चे नारियल और डाब की मांग की आपूर्ति के लिए शहरी बाज़ार और कृषक उत्पादक संगठनों को एक साथ जोड़ने का कार्य भी करती हैं।

खोपरा-नारियल तेल की सामान्य संकल्पना से बाहर निकल कर नारियल के मूल्यवर्धन पर इन कंपनियों को ध्यान केन्द्रित करना होगा। उत्पादक कंपनियों के स्तर पर डेस्सिकेटेड नारियल, वर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध, दूध पाउडर, नारियल चिप्स, बिस्कुट, नारियल फ्लेक्स, नीरा, नीरा से मूल्यवर्धित उत्पाद आदि का उत्पादन कर सकता है। प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने के लिए उद्यमियों के आगे आने का इंतज़ार करने के बजाय इन उत्पादक कंपनियों को चाहिए कि चालू कार्यक्रमों के अंतर्गत उपलब्ध प्रौद्योगिकी समर्थन और वित्तीय सहायता से नई प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने में जुट जाएं।

इन उत्पादक कंपनियों के लिए पूँजी बनाने हेतु किसानों का सामान्य शेयर एकत्रित करने के लिए एक सरल एवं व्यवहार्य तरीका अपनाया जा सकता है। अगर प्रत्येक किसान प्रति तुड़ाई प्रति ताड़ एक नारियल या प्रति वर्ष आठ नारियल लाएं तो दस लाख फलदायी ताड़ वाली कंपनी के पास 80 लाख नारियल एक वर्ष में जमा होंगे। एक नारियल के लिए 10 रुपए का अनुमान लगाने पर इसकी कीमत होगी 8 करोड़ रुपए। प्रारंभिक तौर पर यह पूँजी मध्यम स्तर की नारियल प्रसंस्करण इकाई स्थापिन करने के लिए पर्याप्त है।

नाविबो के ज़रिए भारत सरकार और विविध राज्य सरकारों द्वारा दी जा रही वित्तीय एवं तकनीकी सहायता का लाभ उठाते हुए उत्पादक कंपनियाँ मूल्यवर्धन हेतु प्रसंस्करण के क्षेत्र में पैर जमा सकते हैं। नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने के लिए बोर्ड कुल पूँजी का 25 प्रतिशत क्रेडिट बद्ध बैक एंडेड सब्सिडी के रूप में वित्तीय सहायता देता है जो 50 लाख रुपए तक सीमित है। एसएफएसी और नाबार्ड जैसी संस्थाएं भी विविध योजनाओं के अंतर्गत कृषक उत्पादक संगठनों को वित्तीय सहायता देती हैं।

नारियल विकास बोर्ड ने नारियल उत्पादक समितियों का गठन इस संकल्पना के साथ कार्यान्वित किया था कि भविष्य में ये समितियाँ उत्पादक कंपनियों के रूप में परिवर्तित हो जाएंगी। प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों में 50 प्रतिशत से अधिक कृषक सहभागिता के साथ ये उत्पादक कंपनियाँ बनाने से नारियल आधारित मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन स्तर पर काफी वृद्धि हो जाएगी। ये उत्पादक कंपनियाँ नारियल और नारियल उत्पादों का निर्यात भी कर सकती हैं। भविष्य में ये उत्पादक कंपनियाँ कृषक संस्थानों के रूप में भी उभर सकती हैं जिसके ज़रिए किसानों को प्रत्यक्ष रूप से आवश्यक सेवाएं उपलब्ध हो जाएंगी। सरकार की मूल्य समर्थन योजना के अंतर्गत ये कंपनियाँ प्रापण एजेंसियों का कार्य भी कर सकती हैं और न्यूनतम समर्थन भाव पर प्रापण भी कर सकती हैं।

नारियल उत्पादक कंपनियों का गठन करने, इन्हें सशक्त और कार्यक्षम बनाने हेतु इस लक्ष्य के लिए कार्यरत हस्तियों को आवश्यक प्रशिक्षण देते रहना भी ज़रूरी है। केरल, कर्नाटक और

तमिलनाडु के कुछ संस्थान कृषक उत्पादक संगठनों के गठन, सशक्तिकरण और स्थायीकरण केलिए आगे आए हैं। क्षमता संवर्धन, विज़न बनाना, व्यापार संबंधी उचित योजनाएं बनाना, बैंक से ऋण आवश्यक परियोजनाओं के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करना आदि के लिए इन प्रशिक्षण एवं प्रबंधन संस्थानों के अध्यापकों और विद्यार्थियों का लाभ उठा सकते हैं। इतना ही नहीं उत्पादक कंपनियों और फेडरेशनों के स्तर पर एमबीए और एमएसडब्ल्यू छात्रों का इंटर्नशिप भी कराया जा सकता है। नारियल उत्पादक कंपनियों को अपने इलाके के ऐसे संस्थानों के साथ गठबंधन करना चाहिए। उत्पादक कंपनियों को उद्यमीय क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए अपना एक पेशेवर और तकनीकी टीम बनाने की ज़रूरत है। प्रसंस्करण संबंधी गतिविधियों का कार्यभार संभालने के लिए तकनीकी रूप से योग्य लोगों को चुनना होगा। इसके लिए प्रचालन, विपणन, मानव संसाधन विकास, वित्त, सामान्य प्रबंधन और निर्यात जैसे प्रबंधन क्षेत्रों में कुशल व्यक्तियों को ढूँढ़ निकालना होगा और उनकी मदद से इन कंपनियों को प्रसंस्करण के क्षेत्र में आगे ले जाना होगा।

नाविबो इन कंपनियों को पेशेवर प्रबंधकों और तकनीकी रूप से सुसज्जित व्यापार संगठनों के रूप में कल्पना कर रहा है। उत्पादक कंपनी का पहला लक्ष्य नारियल के लिए बेहतरीन एकीकृत प्रसंस्करण पार्क स्थापित करना है। एकीकृत कांप्लेक्स में नारियल की गरी, पानी, खोपड़ी और छिलके के प्रसंस्करण की व्यवस्था की जानी चाहिए। यह कॉम्प्लेक्स निजी नारियल उत्पादक समितियों और फेडरेशनों के लघु उद्यमों को सुसज्जित बनाने के लिए काम करेगा। उत्पादक कंपनियों के भीतर ही निर्यात लक्षित इकाइयाँ होने से ये इकाइयाँ देशी और निर्यात बाज़ारों में विविध बाज़ार संवर्धन गतिविधियों का हिस्सा बन सकती हैं।

भारत में अब तक कुल 42 नारियल उत्पादक कंपनियाँ पंजीकृत हुई हैं जिनमें से 26 कंपनियाँ केरल में हैं। एक बार ये उत्पादक कंपनियाँ स्थापित होने के बाद अगला चरण है इन कंपनियों के द्वारा उत्पादित उत्पादों का बाज़ार में अलग पहचान बनाना। किसी खास ब्रैंड में खेतों से सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँचने वाले उत्पादों के प्रति लोगों के मन में खास लगाव होता है। यदि उत्पादक कंपनियाँ अपने उत्पादों को खास ब्रैंड के अंतर्गत बाज़ार में लाएंगी तो इसकी अलग पहचान भी बन सकती है।

उत्पादक कंपनियों के कार्यक्षेत्र में मुख्यत: निम्नलिखित गतिविधियाँ होती हैं:

- उत्पादक कंपनी के सदस्य फेडरेशनों और समितियों की गतिविधियाँ बेहतर तरीके से त्वरित करने, इसमें समवाय लाने के लिए उचित कदम उठाना।
- हर महीने फेडरेशनों की गतिविधियों की समीक्षा करना और त्रुटियों को सुधारने के लिए आवश्यक उपाय निकालने में फेडरेशनों की मदद करना।
- नारियल उत्पादक समितियों/ फेडरेशनों के पदधारियों की नेतृत्व कुशलता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण देना।
- उत्पादक कंपनियों के सदस्यों की संख्या में बढ़ोत्तरी करना ताकि कंपनी की पूँजी और उनके पास उपलब्ध नारियल पेड़ों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो जाए।
- नारियल उत्पादक सदस्य किसानों से प्रति ताड़ से एक नारियल के हिसाब से शेयर इकट्ठा करना। एक नारियल की कीमत 10 रुपए तय किया जाए।
- जिस कंपनियों की पूँजी 5 करोड़ से कम है, अपनी पूँजी बढ़ाकर 5 करोड़ करने के लिए आवश्यक कदम उठाना।

- कंपनी की अगुवाई में फसल की तुड़ाई करके छिलके वाले नारियल एकत्रित करना और छिलके से कयर रेशा निकालने के लिए डि-फाइबरिंग इकाई स्थापित करना।

- मान्यता प्राप्त निर्यातकों को निर्यात करने योग्य नारियल सीधे उपलब्ध कराना या खुद निर्यात कार्य में जुट जाना।

- अच्छी गुणवत्ता के खोपड़ा बनाने के लिए आधुनिक खोपड़ा शुष्कक स्थापित करना और खोपड़ा बनाने में जुट जाना। नारियल पानी का उपयोग करके सिरका या नारियल सोडा आदि उत्पाद तैयार करना।

- पके नारियल के साथ साथ डाब की भी तुड़ाई करना और इसके विपणन के लिए आवश्यक कदम उठाना।

- योजना क्षेत्र के नारियल उत्पादक समितियों और फेडरेशनों को गतिविधियों में हिस्सेदार बनाकर इनको सशक्त बनाना।

- नारियल के पुनर्रोपण एवं पुनरुज्जीवन कार्यक्रम के अंतर्गत आवश्यक गुणवत्तापूर्ण नारियल पौध के उत्पादन हेतु नर्सरियों की स्थापना कंपनी द्वारा सीधे या सदस्य नारियल उत्पादक समितियों/फेडरेशनों के ज़रिए करना और रोपण के अगले मौसम के लिए आवश्यक पौध तैयार करना।

- नीरा उत्पादन, एकत्रीकरण और प्रसंस्करण संबंधी कार्य में जुट जाना।

- कंपनी के अधीन प्रत्येक फेडरेशनों में कम से कम 100 नीरा तकनीशियनों को पहचानना। यदि नहीं हुआ तो नए लोगों को ढूँढ़कर आवश्यक प्रशिक्षण देने का कार्य शुरू करना।

- कंपनी के सदस्य फेडरेशनों को अपने अधीन उत्पादक समितियों से नीरा उत्पादित करने योग्य कम से कम 1500 नारियल पेड़ की सूची बनाना।

- नीरा इकट्ठा करने, इसका प्रसंस्करण करने और नीरा से नए मूल्यवर्धित उत्पाद उत्पादित करने के लिए आवश्यक बुनियादी सुविधाएं विकसित करना।

- इसी प्रकार विविध जिलाओं में गठित नारियल उत्पादक कंपनियों के साथ मिलकर सरकारी/गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा दी जा रही सुविधाओं और योजनाओं का लाभ उठाते हुए अपना व्यापार क्षेत्र बढ़ाते रहना।

- योग्यता प्राप्त पेशेवर प्रबंधकों की नियुक्ति होने तक कंपनी के लिए योजना बनाने और इसे अमल में लाने के लिए कंपनी के निदेशकों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिलाने, उत्पादों के विपणन आदि के लिए शैक्षिक प्रबंधन संस्थानों की मदद लेना। इन कार्यकलापों में इस प्रकार की संस्थाओं के अध्यापकों और विद्यार्थियों का सहयोग ले सकता है।

- नारियल किसानों को स्थानीय स्वशासित संस्थाओं(ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, जिला परिषद्) की विविध योजनाओं का लाभ उपलब्ध होना सुनिश्चित करना ।

- कंपनी नियम में उल्लिखित निबंधन एवं शर्तों का पालन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक उपाय अपना लेना और इसका पालन सुनिश्चित करना।

उत्पादक कंपनियों को चाहिए कि वे अपने स्तर पर कंपनी की देखरेख के लिए ऐसे लोगों को ढूँढ़ निकालें जो विषय विशेषज्ञ, प्रौद्योगिकीविद् और अनुभव रखने वाले हो। इनका लाभ उठाकर नारियल से बेहतरीन उत्पाद विकसित करने की कोशिश करने के साथ साथ अपने उत्पादों के लिए देशीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार भी ढूँढ़ निकालना चाहिए। अपनी फसल के लिए किफायतमंद उचित दाम मिलना किसानों की ज़रूरत है। प्रत्येक किसान अपनी नारियल उत्पादक समिति के ज़रिए फेडरेशनों को जो उत्पाद देता है उसका मूल्यवर्धन करके विपणन करने से जो आय प्राप्त होती है इसका एक हिस्सा वापस किसानों को भी प्राप्त होना चाहिए। बेहतरीन किस्म के बीजफल एवं बीजपौध तैयार करने, बौनी प्रजाति के अधिकाधिक नारियल किस्मों को विकसित करने, फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री प्रशिक्षण के लिए नई टीम को तैयार करने, यांत्रिक तरीके से खेती को बढ़ावा देने, उपभोक्ता एवं उत्पादकों के बीच आपसी विचार विनिमय प्रभावी तरीके से करने के लिए नारियल उत्पादक समिति, नारियल उत्पादक फेडरेशन, उत्पादक कंपनियाँ जैसे कृषक उत्पादक समूह के त्रिस्तरीय संगठन सक्षम होंगे। निस्सन्देह ही ये तरीके अपनाने से नारियल किसान जिन समस्याओं से जूझ रहे थे उनका ज़रूर हल निकाल पाएंगे।

# नीरा - कल्पवृक्ष की चमत्कारी देन

**एस. बीना**

*सहायक निदेशक (रा.भा.) नाविबो, कोच्ची*

अभिलाष शाम को दफ्तर से घर लौटते वक्त रास्ते पर नारियल विकास बोर्ड के स्टाल में गया। उसको तो नारियल तेल और वर्जिन नारियल तेल खरीदना था। उसकी पत्नी सितारा गर्भवती है इसलिए वर्जिन नारियल तेल खासकर उसके लिए था। स्टाल में तो सारे नारियल उत्पाद उपलब्ध हैं। किन्तु इस बार एक नई चीज़ पर अभिलाष की आँखें अटक गईं।

"यह क्या है, नई चीज़!", उसने पूछा

"यह नीरा है," स्टोर क्लर्क ने बताया।

"ओ, यही नीरा है। इसके बारे में अक्सर सुनता हूँ। किन्तु अभी तक पीने का मौका नहीं मिला।"

अभिलाष चार बोतल नीरा खरीदकर घर गया।

घर में नीरा देखने के लिए सभी लोग दौड़ आए। दादी बोली, "नीरा गर्भवतियों के लिए बहुत अच्छी है। यह लोहे का खज़ाना है। गर्भवती महिलाएं नीरा लेने से शिशु का स्वास्थ्य बढ़ जाता है और उसका रंग निखर आता है। नवजात शिशुओं के लिए नीरा अत्यंत उपयुक्त है। मलयालम में ऐसी एक कहावत भी है, *माँ के दूध के बाद नारियल पुष्पगुच्छ का दूध* याने कि बच्चों के लिए गुणों में सबसे पहले माँ का दूध ही है किन्तु दूसरा स्थान नीरा को है। नीरा गर्भवतियों और नवजात शिशुओं के लिए उत्तम है"।

## नीरा क्या है?

नारियल पेड़ के बंद पुष्पक्रम से जो रस निकलता है वही नीरा है। इसमें मद्यांश बिल्कुल नहीं है। यह अत्यंत पौष्टिक पेय है। संपूर्ण, शीतल और सामान्य स्वास्थ्य सुधारने के लिए फायदेमंद पेय है। यह अयरन से संपुष्ट है और ऊर्जादायी भी है। इसलिए एनीमिया के मरीज़ों, सर्जरी के बाद रोगियों, गर्भवती महिलाओं, नई माताओं और बढ़ते बच्चों को देने के लिए अत्यंत उपयुक्त है। मनुष्य के लिए अपेक्षित लगभग सभी विटामिन इसमें निहित हैं। यह ताज़गी प्रदायक, चुस्ती-फुर्ति दिलाने वाला और नवजीवन प्रदान करने वाला पेय है। यह क्षण भर में कैलोरी प्रदान करता है और इसलिए खेलकूद से जुड़े लोगों के लिए भी यह अनुशंसित है। यही नहीं, यह वसा और कोलेस्ट्रॉल से मुक्त है। नीरा में निहित शर्करा कम जी आई वाला होता है। इसकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसका ग्लाइसिमिक इंडेक्स 35 मात्र है जो अधिकांश फल और सब्जियों की तुलना में बहुत कम है। फलतः खून में शर्करा के स्तर पर इसका प्रभाव बहुत कम होता है। याने कि यह मधुमेह रोगियों, मधुमेह की पूर्वावस्था वालों और कोई भी इनसान जो खून में शर्करा की मात्रा निश्चित स्तर पार होने से बचना चाहता है, उन सबके लिए उत्तम है।

यह अमिनो अम्लों से भरपूर है और इसमें 17 अमिनो अम्ल निहित हैं। इसमें निहित ग्लूटामिक अम्ल दिमाग अच्छी तरह काम करने के लिए अनिवार्य न्यूरोट्रांसमिटर है, अस्पार्टिक अम्ल चयापचय क्रिया बढ़ाता है और विषाद रोग की चिकित्सा में उपयोगी है, थ्रेयोनिन शरीर में प्रोटीन संतुलन बनाए रखता है और सेरिन दिमाग और स्नायु तंत्र की क्रियाओं को सुगम बनाता है एवं इसमें अन्य अनिवार्य और गौण अमिनो अम्ल भी निहित हैं। ये अमिनो अम्ल, जो प्रोटीन संघटक हैं कोशिकाओं की वृद्धि और मरम्मत, चयापचय क्रिया और होर्मोन एवं एनज़ाइमों का निर्माण आदि के लिए आवश्यक हैं।

नीरा 12 अनिवार्य बी विटामिनों सहित सभी विटामिनों से संपुष्ट है। इसमें निहित बी विटामिनों में इनोसिटोल (विटामिन बी8) सबसे अधिक पाया जाता है जो स्वास्थ्यपूर्ण कोशिकाओं के निर्माण के लिए आवश्यक है और बेचैनी तथा विषाद की चिकित्सा में उपयोगी है और आँखों की समस्यायें, एक्ज़ीमा आदि के लिए फायदेमंद है। इसमें थियामिन, राइबोफ्लेविन, फोलिक अम्ल, कोलाइन, पाइरिडोक्सल, पैरा-अमिनोबेंज़ोइक अम्ल, पैन्टोथेनिक अम्ल और निकोटिनिक अम्ल उच्च मात्रा में निहित हैं। इसमें अल्प मात्रा में विटामिन बी12 भी पाया जाता है जो दूसरे पेड़-पौधों में बिलकुल ही नहीं पाया जाता है। ये सारे बी विटामिन कोशिकीय चयापचय क्रिया में सहायक होते हैं और ऊर्जा प्रदान करते हैं। इसमें फॉस्फोरस, पोटेशियम, नाइट्रजन, मग्नीशियम, मैंगनीज़, कापर, जिंक, कैल्शियम, सोड़ियम आदि खनिज निहित हैं।

## नारियल पेड़ से नीरा

वनस्पति विज्ञान में नारियल एकबीजपत्री परिवार का अंग है और नारियल का पुष्पगुच्छ द्विलिंगी विभाग के अंतर्गत आता है जिसमें नरफूल एवं मादाफूल एक ही पुष्पक्रम में अलग अलग पाये जाते हैं। नीरा निकालने के लिए नारियल के अनखुले पुष्पक्रम को बांधकर तैयार किया जाता है। इसके बाद पुष्पक्रम की नोक काटी जाती है जहाँ से टपकने वाली नीरा इकट्ठा की जाती है। अनखुले पुष्पक्रम की नोक काटने पर उस घाव के फ्लोयम कोशिका से टपकनेवाले रस को नीरा के रूप में इकट्ठा किया जाता है। तंदुरुस्त नारियल पेड़ों में हरेक पर्णकक्ष से नयमित रूप से पुष्पक्रम निकलता है, अतः साल भर नीरा निकाली जा सकती है। इसलिए एक ही नारियल पेड़ में एक से अधिक बंद पुष्पक्रम से या विभिन्न नारियल पेड़ों में एक साथ नीरा का टैप्पिंग कर सकता है।

**100 मि ली नीरा में निहित पोषकतत्व**

| | |
|---|---|
| कुल शर्कराएं | 14.40 ग्रा. |
| सिट्रिक अम्ल | 0.50 ग्रा. |
| आयरन | 0.15 मि.ग्रा |
| फोसफोरस | 7.59 मि.ग्रा |
| एस्कोर्बिक अम्ल | 16-30 मि.ग्रा. |
| कुल प्रोटीन | 0.23-0.32 ग्रा |
| ग्लाईसेमिक इंडक्स(जीआई) | 35 |
| अल्कहॉल (प्रतिशत में) | शून्य |

पुष्पक्रम बांधने के तीन हफ्ते के अंदर उस से बहाव शुरू होता है। रस की मात्रा धीरे धीरे बढ़ जाती है और जब वह अधिकतम हो जाती है तब रस दिन में दो बार इकट्ठा किया जाता है। पुष्पक्रम से रस का बहाव करीब एक महीने तक या उससे भी अधिक समय तक जारी रहता है। इस अवधि में, दूसरे पुष्पक्रम से भी नीरा उतारी जाती है। नारियल पेड़ और मौसम के अनुसार नीरा की मात्रा में भिन्नता होती रहती है। आँकड़ों के अनुसार एक नारियल पेड़ से नीरा का औसतन उत्पादन प्रति दिन

2.1 लीटर है। 4.5 लीटर से 5 लीटर नीरा देनेवाले नारियल पेड़ भी है। सामान्य रूप से एक पेड़ से छः महीने तक नीरा उतारी जाती है तब यह संभावना रहती है कि एक ही पेड़ के तीनों पुष्पक्रमों से एक ही समय पर नीरा उतारी जाती हो। अक्सर पाया जाता है कि नीरा उतारने के तीसरे महीने से सबसे अधिक मात्रा में नीरा प्राप्त होती है।

नीरा आसानी से किण्वित हो जाने के कारण उसके परिरक्षण और प्रसंस्करण के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होती है। नीरा का प्रसंस्करण करके उसके कुदरती रूप में परिरक्षण करने के लिए डीआरडीओ, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनबीएल) ,पुणे, सीडीबी इंस्टिट्यूट ऑफ टेकनलोजी (सीआईटी), आलुवा और एस सी एम एस इंस्टिट्यूट ऑफ बयोसाइन्स एन्ड बयोटेकनलोजी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, कलमश्शेरी ने प्रौद्योगिकी विकसित की हैं। स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद विटामिन, शर्कराएं और दूसरे पोषकतत्व बनाए रखने में यह प्रौद्योगिकी सहायक है। पास्तुरीकरण और रोगाणुनाशन जैसे ताप परिरक्षण विधियां इस उत्पाद को परिरक्षित करने और भंडारण अवधि बढ़ाने के लिए अपेक्षित है।

**नीरा से मूल्य वर्धित उत्पाद**

नीरा के प्रसंस्करण से नीरा सिरप, नीरा हणी, नीरा गुड तथा नीरा शक्कर आदि बनाए जा सकते हैं। नीरा उत्पादों का उच्च पोषण मूल्य तथा कम ग्लाइसिमिक इंडेक्स इन उत्पादों को आजकल के स्वास्थ्य जागरूक जनता के बीच लोकप्रिय बना सकते हैं। नीरा गुड़ और शक्कर दोनों अत्यंत पौष्टिक हैं। नीरा में निहित सारे पोषकतत्व इन उत्पादों में भी पाए जाते हैं। ग्लाइसेमिक इंडेक्स भी 35 है। इसलिए ये दोनों अत्यंत सेहतमंद उत्पाद माने जाते हैं। सफेद चीनी के विरुद्ध जो अभियान चल रहा है उसके मद्दे नज़र नीरा शक्कर के सेहतमंद गुणों के कारण लोगों के बीच उसकी लोकप्रियता बढ़ जाने की संभावना है। खाद्य उद्योग में नीरा सिरप और हणि की बड़ी माँग है। बैकरियों या घरों में जो चोकलेट, केक, बिस्कुट, जैम, गुलाब जामुन, लड्डू, जलेबि आदि बनाई जाती हैं इसमें मिठास के लिए नीरा हणि या शक्कर मिलाकर मिठाइयों का ग्लाइसीमिक इंडेक्स कम करके इन्हें सेहतमंद भी बना सकते हैं।

**ग्रीन कॉलर नौकरियाँ - नीरा तकनीशियन**

नारियल की भूमि केरल में नारियल पेड़ से प्राप्त नीरा किसानों और कृषि कामगारों के जीवन में नई उमंग भर देती है। किसानों की आमदनी में बढ़ोत्तरी लाने के साथ साथ नीरा रोज़गार के नए अवसर खोल देती है।

नीरा क्रांति के ज़रिए नारियल विकास बोर्ड और नारियल किसानों के त्रिस्तरीय संगठन नारियल पेड़ को किसानों के ही नहीं कामगारों के जीवन की भी आधारशिला बनाने का प्रयास कर रहे हैं। नारियल पेड़ से नीरा उतारने के लिए बोर्ड और नारियल उत्पादक फेडरेशन बोरोज़गार युवा-युवतियों को नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण दे रहे हैं।

नीरा उत्पादन की मात्रा नीरा उतारनेवाले की कार्यकुशलता पर निर्भर है, अतः नीरा उतारने के लिए कुशलता अपेक्षित है। नारियल विकास बोर्ड नीरा उतारने के लिए नीरा तकनीशियनों के नाम से कुशल कार्यबल विकसित करने के प्रयास में है। इस प्रकार एक ग्रीन कॉलर नौकरी विकसित हो रही है। नीरा तकनीशियनों के लिए प्रशिक्षण इसलिए महत्वपूर्ण है कि रस की उपज नीरा तकनीशियन की कार्यकुशलता पर निर्भर है। नीरा निर्धारित अनुपात में बाँटकर किसान और नीरा तकनीशियन दोनों इसके लाभभोगी बन सकते हैं और इस प्रकार इस क्षेत्र में सुस्थिर विकास संभव होगा।

नारियल विकास बोर्ड के आलुवा के वाष़क्कुलम में स्थित नाविबो प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईटी), बोर्ड के विविध इकाई कार्यालयों और बोर्ड में पंजीकृत नारियल उत्पादक फेडरेशनों में नीरा तकनीशियनों को प्रशिक्षण दिया जा रहा

है। नीरा उत्पादन से ये नीरा तकनीशियन प्रति महीने औसतन 30000 रुपए तक कमा सकते हैं।

**प्रवीण की उपलब्धि**

केरल के कोल्लम जिले के कैप्पुषा फेडरेशन में नीरा तकनीशियन है प्रवीण। पिछले मार्च में उनका वेतन 41000 रु.था। कुल मिलाकर दस नारियल पेड़ों से प्रवीण नीरा उतारता है। हर दिन 33 से 39 लीटर तक नीरा प्रवीण उतारता है। प्रवीण की इस उपलब्धि से प्रेरित होकर उसके कई दोस्त नीरा तकनीशियन बनने का प्रशिक्षण पा रहे हैं।

**नीरा उतारने के लिए महिलाएं भी आगे**

केरल के कोषिक्कोट जिले में पायम्ब्रा गाँव की चार महिलाएँ नारियल पेड़ से नीरा उतारने का 42 दिवसीय प्रशिक्षण पाकर नीरा उतारने के काम में लगी हुई हैं। ये हैं रिजिला, विद्या, गीता और अनिता। इनमें से अनिता ने ही सबसे पहले प्रशिक्षण पाकर बाकी सारी महिलाओं को प्रशिक्षण दिलाया। पायम्ब्रा नारियल उत्पादक फेडरेशन के नारियल पेड़ों से ये महिलाएँ नीरा उतार रही हैं। महिला सशक्तीकरण की अनमोल मिसाल हैं ये महिलाएँ। नीरा उतारने के लिए ये दिन में दो बार, सुबह और शाम नारियल पेड़ पर चढ़ती हैं और नीरा इकट्ठा करती हैं। इन्हें हरेक पेड़ से प्रति दिन चार लीटर नीरा मिल जाती है।

प्रशिक्षण के बाद ये फेडरेशन के लिए काम कर रही हैं। फेडरेशन से इन्हें प्रति माह 10000 रु से 15000 रु तक वेतन मिल जाता है। इसके अलावा, फेडरेशन उतारती नीरा की मात्रा के अनुसार निश्चित रकम प्रोत्साहन स्वरूप दे रहे हैं। किसी भी प्रकार के हादसे से बीमा सुरक्षा भी इन्हें प्राप्त है।

**नीरा का विपणन और संवर्धन**

नीरा एक नया उत्पाद है, इसलिए लोगों के बीच इसके प्रति कई शंकाएँ हैं। अतः बाज़ार में उचित तरीके से नीरा को पेश करना ज़रूरी है। नीरा का स्थान वास्तव में बाज़ार में आम उपलब्ध लघु पेयों या फल रसों के साथ नहीं बल्कि प्रोटीन और विटामिन समृद्ध पेयों के बीच है। लेकिन नीरा की विशेषता यह है कि इसे कृत्रिम तरीकों से पोषण संपुष्ट नहीं बनाया गया है बल्कि नीरा कुदरती है। मधुमेह के रोगी भी बेफिक्र नीरा पी सकते है क्योंकि इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स मात्र 35 है। स्वास्थ्य पेय के अलावा नीरा का उपयोग पर्यटकों के लिए तथा पार्टियों,शादियों और कार्यालय बैठकों में स्वागत पेय के रूप में किया जा सकता है। नीरा के औषधीय और सेहतमंद गुणों के बारे में कोची स्थित अमृता स्कूल ऑफ फार्मेसी में अनुसंधान चल रहा है। उम्मीद है कि इस अनुसंधान के निष्कर्षों से स्वास्थ्य सुरक्षा में और रोगों की इलाज में नीरा को नई प्रतिष्ठा मिलेगी।

नारियल विकास बोर्ड में पंजीकृत 173 नारियल उत्पादक फेडरेशनों को नारियल पेड़ से नीरा उतारने की अनुमति मिली है। केरल में गठित 19 नारियल उत्पादक कंपनियों को नारियल विकास बोर्ड नीरा का प्रसंस्करण करने के लिए वित्तीय सहायता दे रहे हैं। नीरा प्लांट लगाने के लिए अपेक्षित व्यय का 25 प्रतिशत वित्तीय सहायता नारियल प्रद्योगिकी मिशन के तहत बोर्ड दे रहे हैं।

आज के युग में लोग खरीदारी का निर्णय उत्पाद के स्वास्थ्य वर्धक गुण और गुणवत्ता के आधार पर लेते हैं। नीरा और नारियल शर्करा जैसे पौष्टिक गुणों से संपुष्ट सेहतमंद उत्पाद घरेलू और निर्यात बाज़ार में अपना स्थान जमा रहे हैं। स्वास्थ्य संबंधी बढ़ती जागरूकता के साथ खाद्य बाज़ार में कम कैलोरी वाले उत्पादों की वैश्विक माँग दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। मोटापा, मधुमेह और दाँतों के सड़न से पीड़ित लोगों के लिए नीरा एवं नारियल शर्करा उत्तम हैं। नीरा और इसके उत्पाद खनिज पदार्थों और विटैमिनों से संपुष्ट होने के कारण इस की संभावनाएँ असीम हैं। हमारे राष्ट्रपिता महात्मागाँधीजी के शब्द यहाँ खरा उतरते हैं कि नीरा देश की गरीबी को मिटाने का उपाय है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मेरे सपनों का भारत' में यह भी कहा है कि चाय इत्यादि के बदले मनुष्य सबेरे नीरा पी ले तो उसे दूसरा कुछ पीने या खाने की आवश्यकता नहीं रहनी चाहिए।

# दिल्ली एवं राजधानी क्षेत्र में नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों की संभावनाएँ

***जी आर सिंह एवं **अरुण पॉल,**

** निदेशक, ** तकनीकी अधिकारी, नाविबो, बाज़ार विकास सह सूचना केंद्र, दिल्ली*

नारियल से अनेक उत्पाद बनाए जा सकते हैं और इस अनोखी फसल के हरेक भाग का उपयोग होता है। नारियल का सबसे बड़ा वाणिज्यिक उत्पाद खोपरा है जिससे नारियल तेल निकाला जाता है। शोषित नारियल, नारियल क्रीम, वर्जिन नारियल तेल, सिरका, डाब पानी, नारियल दूध आधारित उत्पाद, नीरा और उसके उत्पाद तथा कयर जैसे खाद्येतर औद्योगिक उत्पाद नारियल के मूल्य वर्धन से बनाए जाते हैं। इनमें से कई उत्पाद दुनियाभर में मिल जाते हैं लेकिन कुछ उत्पाद खास जगहों में ही मिलते हैं। उत्तर भारत के ज्यादातर लोगों को नारियल के विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों और दैनिक जीवन में इन उत्पादों के उपयोगों के बारे में जानकारी नहीं है।

नई दिल्ली और राजधानी के आसपास के इलाकों में नारियल उत्पादों की उपलब्धता के बारे में एक यादृच्छिक सर्वेक्षण करने से पता चला कि दिल्ली और आसपास के इलाकों में नारियल केश तेल और डाब के लिए बड़ी माँग है। खाद्य उपयोग का नारियल तेल दक्षिण भारतीयों की दुकानों में पाया गया। विभिन्न ब्रैंडों के नारियल केश तेल छोटी खुदरे दुकानों में तक उपलब्ध है जो साबित करता है कि उत्तर भारत के ज्यादातर लोग नारियल तेल को अच्छा केश तेल

मानते हैं; पकाने का तेल नहीं। डाब पानी और नारियल पल्प सबको पसंद है। गर्मियों में उत्तर भारत में डाब पानी की माँग के मद्दे नज़र कई उद्यमी आजकल पैकटबंद नारियल पानी का विपणन और वितरण करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप ज्यादातर दुकानों में पैकटबंद नारियल पानी पाया गया। ऐसा लगता है कि अगर डाब दिल्लीवालों को इतना पसंद है तो लंबी तेज़ गर्मियों में उन्हें नारियल का पौष्टिक पेय नीरा चखने को मिल जाए तो अन्य कार्बनीकृत लघु पेयों का स्थान अवश्य नीरा ले लेगी।

देशी उत्पादों के अलावा कई विदेशी नारियल उत्पाद भी सूपर बाज़ारों में उपलब्ध हैं जिनमें थाइलैंड के नारियल उत्पाद प्रमुख हैं। इन उत्पादों में से नारियल गरी के छोटे टुकड़े, नैटा डी कोको , लीची या आम के रस मिलाया नारियल पानी काफी लोकप्रिय हैं हालाँकि देशी उत्पादों के मुकाबले ये महंगे हैं।

नारियल दूध तथा क्रीम का भी थाईलैंड से आयात किया जाता है तथा भारतीय उद्यमी इसका विपणन करते हैं। शेफ तथा बेकरों के बीच इस उत्पाद की बड़ी माँग है। गृहणियों, लघु पैमाने पर मिठाइयाँ बनानेवालों तथा बेकरों के बीच डाबर तथा नेस्ले के नारियल दूध/क्रीम लोकप्रिय है। यद्यपि दक्षिण भारत की कई कंपनियाँ ऐसी देशी उत्पादों का उत्पादन और विपणन करती हैं परंतु इसकी जानकारी दिल्ली के कुछ दक्षिण भारतीयों को ही है। कई तरह के मिष्टान्न और मिठाइयाँ तैयार करने में उपयोगी ये उत्पाद व्यापक अभियान तथा टीवी विज्ञापनों के द्वारा लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

नारियल भरा चोकलेट बार बाउंटी जिसका विपणन मार्स इंटरनैशनल द्वारा किया जाता है बच्चे, बूढ़े सबकी मनपसंद चीज़ है लेकिन भारत में ही बना नारियल भरा चोकलेट कहीं भी नहीं देखने को मिला। अच्छा प्रचार-प्रसार किया जाए तो ऐसे चोकलेटों की बड़ी माँग हो सकती है।

# उत्तर-पूर्वी भारत मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के लिए उभरता केंद्र

**रजत कुमार पाल**

*उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी*

उत्तर पूर्वी भारत के सात राज्य असम, मेघालय, मणिपुर, मिज़ोरम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश और त्रिपुरा धीरे धीरे नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पादों के लिए संभावित क्षेत्रों के रूप में उभर रहे हैं। नारियल बिस्कुट, कुक्कीज़, नारियल पानी, नारियल क्रीम, नारियल दूध पाउडर, नारियल तेल आदि उत्तर पूर्वी भारते के मॉलों में मिलने लगे हैं।

असम का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार बिहु है जो वर्ष में तीन बार अप्रैल-मई, जनवरी तथा अक्तूबर में मनाया जाता है और दुर्गा पूजा अक्तूबर में मनाया जाता है। इन त्योहारों के अवसरों में घर में नारियल से बने पित्ता, लारू जैसे विशिष्ट पकवानों की असमियो तथा असम में रहनेवाले बंगालियों के बीच बड़ी माँग होती है। इन त्योहारों के अवसरों पर बाज़ार और खुदरे बिक्री केंद्रों में ये उत्पाद वाणिज्यिक रूप में मिल जाते हैं।

खाद्येतर वस्तुओं में नारियल तेल का केश तेल के रूप में उपयोग होता है। असमियों के बीच प्रचलित पुरानी रिवाज़ है बालों पर नारियल तेल लगाना। केश तेल के अलावा बाज़ार में नारियल तेल आधारित साबुन और शैम्पू भी उपलब्ध है जो धीरे धीरे बाज़ार में ज़ोर पकड़ रहे हैं।

खाद्य एवं खाद्येतर नारियल उत्पादों के लिए उत्तर पूर्वी राज्यों में माँग के अध्ययन के लिए विस्तृत सर्वेक्षण की ज़रूरत है तथा तदनुसार बाज़ार संवर्धन, प्रचालन तंत्र, उत्पादकों और ग्राहकों के बीच संपर्क आदि के संबंध में बाज़ार रणनीति बनाई जा सकती है।

नारियल बिस्कुट, नारियल दूध, नारियल दूध पाउडर, नारियल अचार, नारियल टोस्ट पित्ता, नारियल स्क्वाश तथा नारियल शैम्पू, नारियल केश तेल तथा नारियल साबुन उत्तर पूर्व में विभिन्न दुकानों में उपलब्ध हैं।

---

दिल्ली बाज़ार में विदेशी नारियल उत्पादों की उपलब्धता दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। यह इस बात की सूचक है कि उत्तर भारत में उच्च गुणवत्ता के नारियल उत्पादों की बड़ी माँग है। इसके अलावा उत्तर भारत में बहुत सारे दक्षिण भारतीय भी रहते हैं जिनके लिए नारियल के विविध उत्पाद परिचित हैं। नारियल उत्पादों की वर्तमान पूर्ति कतई पर्याप्त नहीं है। इसलिए दिल्ली और आसपास के इलाकों में नारियल उत्पादों के विपणन के लिए बड़ी गुँजाइश है।

भारत के आर्थिक विकास में कृषि उद्योग को महत्वपूर्ण प्राथमिकता दी जाती है। इसकी शुरुआत महात्मा गाँधीजी द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन के समय देशी ग्रामोद्योगों के विकास पर ज़ोर देने से हुई। ग्रामोद्योग के लिए नारियल आधारित उद्योग सबसे उपयुक्त है। वर्तमान सर्वेक्षण से पता चला है कि दिल्ली में नारियल आधारित उत्पादों की खास करके नारियल आधारित केश तेल, पैकटबंद डाब पानी, मिठाइयाँ आदि की बड़ी गुँजाइश है। इसके अलावा, आम जनता के बीच मीड़िया के ज़रिए विभिन्न नारियल उत्पादों और उसके स्वास्थ्यवर्धक और औषधीय गुणों के संबंध में जागरूकता पैदा करना ज़रूरी है ताकि नारियल के संबंध में लोगों की गलत अवधारणाएँ दूर की जा सकें और लोग इन्हें अपनाए जाएं।

# बिहार में विभिन्न नारियल उत्पाद पेश करने से पहले जागरूकता पैदा करना आवश्यक

**श्यामलाल**

*सहायक निदेशक, राज्य केंद्र, नाविबो, पटना, बिहार*

नारियल दुनिया में सबसे उपयोगी पेड़ों में से एक है जो करोड़ों को खान पान प्रदान करता है खासकर के उष्णकटीबंधीय क्षेत्रों में। मूल देश से नारियल तटीय एवं उष्णकटीबंधीय देशों में व्यापक रूप में फैल गया। बढ़वार के प्रत्येक चरण में नारियल के विभिन्न भागों से याने डाब, डाब पानी, डाब गरी, नारियल, नारियल गरी आदि से विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पाद बनाए जा सकते हैं। इसके अलावा नारियल खोपड़ी, छिलका तथा लकड़ी भी विविध कार्यों के लिए उपयोग में लाए जा सकते हैं। पहली बार बिहार में नारियल का प्रवेश ओड़िशा के पुरी जगन्नाथ मंदिर और आसपास की ऐतिहासिक जगहों से लौटे स्थानीय तीर्थ यात्रियों द्वारा हुआ। अपने साथ ले आए नारियलों को उन्होंने अपने आँगन में उपयोग एवं अलंकार के लिए लगा लिए। वर्तमान में भी नारियल की खेती कोशि तथा उत्तर बिहार तक सीमित है। मध्य बिहार में गंगा के किनारे और पटना के आसपास के कुछ इलाकों में छोटे नारियल बागान पाए जाते हैं। मुख्य रूप से नारियल आँगन में या अन्य फसलों के बागों की सीमाओं में लगाए जाते हैं। बिहार के किसानों ने नारियल की नियमित रूप से खेती अब तक शुरू नहीं की है।

## बिहार में नारियल के मूल्य वर्धन की स्थिति

बिहार में नारियल का उपयोग मुख्य रूप से धार्मिक अनुष्ठानों खासकर के छठ त्योहार में किया जाता है। नारियल तेल का उपयोग केश तेल और मालिश तेल के रूप में किया जाता है। नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों की उपलब्धता पर पटना और आसपास के मॉलों में एक सर्वेक्षण किया गया। यहाँ पाए गए प्रमुख मूल्य वर्धित उत्पाद हैं नारियल ज्यूस, नारियल केश तेल, नारियल तेल, नारियल बिस्कुट, डेसिकेटड नारियल पाउडर, नारियल दूध, नारियल क्रीम आदि।

ज्यादातर लोगों को पटना के बाज़ारों में उपलब्ध नारियल उत्पादों की जानकारी नहीं है इसलिए बिहार में नारियल उत्पाद पेश करने से पहले इन के प्रति जागरूकता पैदा करना आवश्यक है। बाज़ार में नाममात्र मूल्य वर्धित उत्पाद ही उपलब्ध हैं इसलिए बिहार में नारियल के मूल्य वर्धन के लिए बड़ी गुँजाइश है।

# नीरा जिगर की बीमारी दूर कर सकती है

अध्ययन से पाया गया कि नारियल पेड़ों से उतारती नीरा जिगर की बीमारियों की इलाज के लिए उपयोगी है। इस पर भारतीय विज्ञान संस्था, बैंगलूर ने अध्ययन चलाया था। यह अध्ययन जिगर की मरीज़ों और नारियल किसानों के दिलों में उम्मीद जगा दी है।

मदिरा पान से जिगर को होने वाली बीमारियों के लिए नीरा उपयोगी पायी गयी है। अध्ययन के नतीजों से नीरा का उपयोग करने पर जिगर की बीमारी पूरी तरह ठीक होती पाई गई। अध्ययन टीम में भारतीय विज्ञान संस्था के अजैविक और भौतिक रसायन विभाग की वैज्ञानिक डॉ.एस.संध्या, पाला सेंट थोमस कॉलेज के जैव रसायन के सहायक प्रोफसर डॉ.एम.रतीश और अनुसंधानकर्ता स्वेन्या पी.जोस शामिल थे।

नारियल पेड़ के बंद पुष्पक्रम को काटने पर निकलने वाले रस को नीरा कही जाती है। इसमें शराब का अंश बिलकुल नहीं है। यह स्वादिष्ठ होने के साथ साथ औषधीय और पोषणिक गुणों से भी भरपूर है।

पहले चलाए गए अध्ययनों से साबित हुआ है कि नीरा क्षय, मूत्राशय संबंधी रोगों और अस्तमा की इलाज के लिए उपयोगी है। शराब पीने से जिगर में एक विषैला पदार्थ असेटालडिहाइड जमा होता है। अध्ययन में जिगर से इस पदार्थ को निकालने की नीरा की क्षमता साबित हुई है। जिगर के इनज़ाइम अल्कहॉल को असेटालडिहाइड में बदलता है। जब बड़ी मात्रा में यह पदार्थ जिगर में जमा हो जाता है, जिगर के कोशाणुओं को नुक्सान पहुँचता है। शराब की खपत ओक्सीकारक दबाव भी बढ़ाता है। कपफार कोशाणु और स्टेल्लेट कोशाणु इससे उत्तेजित होते हैं। जिगर का सूजन और एक्स्ट्रासेलुलार मैट्रिक्स (ECM) का नाश कुछ अन्य समस्याएं हैं।

नीरा अमिनो अम्लों, विटामिनों, कैल्शियम और आयरन का भंडार है। 100 मिली लीटर नीरा में 75 कैलोरी ऊर्जा, 250 मिलीग्राम प्रोटीन और 16 मिलीग्राम शर्करा निहित हैं। अध्ययन में कहा गया है कि भले ही नीरा मीठा है, ग्लाइसिमिक इंडेक्स कम होने के कारण मधुमेह के मरीज़ भी नीरा पी सकते हैं।

विटामिन ई, सी और बी निहित होने के कारण यह बढ़िया निरोक्सीकारक भी है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि नीरा जिगर की सामान्य क्रियाएं भी बढ़ा सकती है।

# नारियल के नुस्खे

इन्दु नारायणन

## 1. बेसन का ढोकला

**सामग्रियाँ:**

बेसन - डेढ़ कप
अदरक का पेस्ट - आधा चम्मच
हरी मिर्च का पेस्ट - आधा चम्मच
हल्दी पाउडर - आधा चम्मच
चीनी - 1 चम्मच
दही - 1 कप
पानी - 1 कप
राई - आधा चम्मच
कड़ी पत्ता - 7-8
साबुत हरी मिर्च - 2-3
तेल - 1 चम्मच
हरा धनिया - 1 बड़ा चम्मच
कसा हुआ नारियल - 2 बड़ा चम्मच
नमक - स्वादानुसार

***बनाने की विधि:*** बेसन में मिर्च का पेस्ट, अदरक का पेस्ट, नमक, हल्दी, चीनी और थोड़ा सा तेल मिलाएं। अब दही मिलाकर अच्छी तरह से फेंटें। पानी मिलाकर फिर से दोबारा अच्छी तरह से फेंटें। जब स्टीमर में रखा पानी उबलने लगे तब बेसन के मिश्रण को चिकनाई लगी टिन में भरें। ढक्कन और स्टीमर के बीच एक पतला कपड़ा लगाएं और कसकर बंद कर दें। बेसन का मिश्रण लगभग 20-25 मिनट तक भाप में पकाएं। टिन को स्टीमर से निकालकर एक तरफ रख दें। अब तड़का देने के लिए तेल गरम करें। इसमें राई, कड़ी पत्ता और हरी मिर्च डालें। जब रंग कुछ बदलने लगे तभी इसमें एक चौथाई कप से कम पानी डालें और उबलने दें। ढोकले को अपने मन पसंद आकार में काटें और उसके ऊपर छौंक डालें। ऊपर से धनिया पत्ते और कसा हुआ नारियल से सजाकर सर्व करें।

## 2. मिर्च सालन

**सामग्रियाँ:**

बड़ी हरी मिर्च - 200 ग्राम
लहसुन-अदरक का पेस्ट - 25 ग्राम
तेज पत्ता - 2
हल्दी पाउडर - 1 छोटा चम्मच
धनिया पाउडर - 1 छोटा चम्मच
गरम मसाला - 10 ग्राम
चाट मसाला - 1 छोटा चम्मच
हरा धनिया - 1 छोटा चम्मच

जीरा पाउडर - 1 छोटा चम्मच
नमक - स्वादानुसार

**तलने के लिए**

तेल - आवश्यकतानुसार
प्याज - 2 मध्यम आकार के

**भरने के लिए**

मूँगफली -20 ग्राम
कसा हुआ पनीर -20 ग्राम
कद्दूकस किया हुआ नारियल -30 ग्राम
धनिया पाउडर, गरम मसाला
नमक - स्वादानुसार

***बनाने की विधि:*** सबसे पहले कड़ाही में थोड़ा सा तेल डालकर भराव की सामग्री एक साथ भून कर अलग रख लें। इसके पश्चात् कड़ाही में तेल गरम करके उसमें प्याज़, लहसुन, अदरक का पेस्ट तब तक भून लें कि वह सुनहरे रंग का न हो जाए। अब इसमें गरम मसाला, थोड़ा भूनने के बाद हल्दी पाउडर, जीरा पाउडर, धनिया पाउडर और चाट मसाला डालें। इसके बाद इसमें थोड़ा सा पानी और नमक डालें। इसे गाढ़ा होने तक पकाएं। फिर आँच से उतार लें। हरी मिर्चों में तेज़ चाकू से बीचों बीच चीरा लगाएं और उसमें भराव की सामग्री भरें। भरी मिर्चों को गरम तेल में डीप फ्राई करें। अब पहले से तैयार ग्रेवी में फ्राई की हुई हरी मिर्च

मिलाएं और धीमी आंच पर पकाएं। अच्छी तरह से पक जाने के बाद इसे परोसने वाले बर्तन में डालकर हरी धनिया से सजाकर गरमागरम परोसें।

### 3. पनीर ढोकला

**आवश्यक सामग्रियाँ:**

पनीर - 250 ग्राम

बेसन - 200 ग्राम

खाने का सोडा - आधा चम्मच

चीनी - बड़ा चम्मच

नींबू का रस - 2 छोटा चम्मच

पानी - 2 गिलास

कसा हुआ नारियल - 3 छोटा चम्मच

धनिया पत्ता - थोड़ा

नमक - स्वादानुसार

**बनाने की विधि:** पानी में चीनी,

नमक और नींबू का रस मिला लें। एक-एक गिलास पानी दो भिगौनों में डालें। बेसन को छान लें। दोनों भिगौनों में आधा-आधा बेसन मिला लें। अब एक कडाही या भिगौने में 2-3 गिलास पानी उबालें। उसके ऊपर उसी के नाप की एक थाली में तेल लगाकर रखें। बेसन के एक घोल में आधा चम्मच सोडा डालकर अच्छी तरह से मिलाकर चिकनाई लगी थाली में फैला दें। इसके ऊपर ढक्कन लगाकर लगभग 20-25 मिनट तक पकाएं। ढोकले के आकार की गोलाई में ही पनीर को फैलाकर उसके ऊपर तुरन्त बेसन का दूसरा घोल फैला दें। उसे भी 15-20 मिनट तक पकाएं। अब एक कड़ाही में एक बड़ा चम्मच तेल गरम करके उसमें राई, हींग, कड़ी पत्ता और हरी मिर्च को डालकर इसमें एक कप पानी डालकर उबलने दें। उबलने के बाद ढोकले को टुकड़े कर उसके ऊपर छौंक डालें। एक प्लेट में ढोकले के टुकड़ों को रखकर ऊपर से कसा नारियल और धनिया पत्ते से सजाकर किसी भी चटनी के साथ सर्व करें।


## बोर्ड की पत्रिकाओं की विज्ञापन दर

नारियल विकास बोर्ड के प्रकाशन हैं इंड़ियन कोकोनट जर्नल (अंग्रेज़ी) इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम), भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी), भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़), इंडिया तेन्नै इदष़ (तमिल), भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु) तथा भारतीय नारल पत्रिका (मराठी)। इन पत्रिकाओं में वैज्ञानिक नारियल कृषि तथा नारियल उद्योग से संबंधित लेख प्रकाशित करते आ रहे हैं। इन पत्रिकाओं के अधिकांश ग्राहक किसान, अनुसंधानकर्ता, उद्योगपति, व्यापारी, पुस्तकालय आदि हैं।

| विज्ञापन के आकार | इंडियन कोकनट जर्नल (अंग्रेज़ी पत्रिका) | इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम पत्रिका) | इंडिया तेन्नै इदष़ (तमिल त्रैमासिक) | भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़ त्रैमासिक) | भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी त्रैमासिक) | भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु अर्धवार्षिक) | भारतीय नारल पत्रिका (मराठी अर्धवार्षिक) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | Nil | Nil | 5000 | 5000 | Nil | 5000 | 5000 |
| पूरा पृष्ठ (रंगीन) | 20000 | 20000 | 10000 | 10000 | 5000 | 10000 | 10000 |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | Nil | Nil | 3000 | 3000 | Nil | 3000 | 3000 |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | Nil | Nil | 1500 | 1500 | Nil | 1500 | 1500 |
| बाहरी पृष्ठ का भीतरी भाग (रंगीन) | 25000 | 25000 | 10000 | 10000 | 8000 | 10000 | 10000 |
| बाहरी पृष्ठ (रंगीन) | 30000 | 30000 | 15000 | 15000 | 10000 | 15000 | 15000 |

* प्रत्येक पत्रिका में एक बार विज्ञापन देने की दर।

पत्रिका के किन्हीं दो अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 10 प्रतिशत की तथा तीन या अधिक अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 12 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। मान्य विज्ञापन एजेंसियों को 15 प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

# प्रश्नोत्तरी

**प्रश्नः 1)** ***नारियल ताड़ों में नमक डालने का लाभ क्या है? क्या हम इसका प्रयोग दूसरे उर्वरकों के साथ कर सकते हैं या अलग से करना पड़ेगा? प्रयोग की मात्रा कितनी है?***

***2) क्या सूक्ष्म पोषक तत्वों का मिश्रण उपलब्ध है या सूक्ष्म पोषक तत्व अलग-अलग देना चाहिए?***

***3) क्या अच्छी तरह स्थापित हुए नारियल बागों में जुताई करना अनिवार्य है?***

**उत्तरः** 1) उच्च भूमि स्थितियों में सोडियम क्लोराइड(नमक) का प्रति ताड़ 2.0 कि.ग्रा.की दर पर वार्षिक प्रयोग नारियल के लिए लाभदायी साबित हुआ है। वर्षा ऋतु में थालों में नमक का अलग से प्रयोग भी वाँछनीय है। नारियल की उपज बढ़ाने के लिए क्लोरिन के स्रोत के रूप में नमक का प्रयोग भी लाभदायी पाया गया। गर्मियों के महीनों में ऊँची प्रजाति के नारियल पेड़ों की सूखारोधी क्षमता बढ़ाने के लिए नमक डालना अच्छा है। यह भी रिपोर्ट किया गया है कि अमोणियम सल्फेट के साथ नमक मिलाकर प्रयोग करने से नारियल में होने वाले फफूँदी रोग के खिलाफ प्रतिरोधिता क्षमता बढ़ जाती है। फिलिप्पाइन्स में किए गए अध्ययन से यह पता चला है कि 1.76 से 7.04 कि.ग्रा.की दर पर नमक का प्रयोग करने से क्लोरिन की कमी वाले ताड़ों ने शीघ्र अंकुरण वाले बीजफल प्रदान किया है और अंकुरण की उच्च प्रतिशतता तथा अधिक तंदुरुस्त बीजपौधे रिकार्ड किया गया है। मृदा में नमक का प्रयोग करने से पुष्पगुच्छों, फूलों और फलों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। आइवरी कोस्ट में किए गए परीक्षणों में खोपरा उत्पादन तकरीबन 10 प्रतिशत अधिक पाया गया और फिलिप्पीन्स से भी सोडियम का गुणकारी प्रभाव रिपोर्ट किया गया। प्रति वर्ष प्रति ताड़ 2 कि.ग्रा. नमक देने से किसी भी उर्वरक परीक्षण की अपेक्षा पर्णीय पीलापन रोग कम हो गया। समुद्री तट से सुदूर स्थित क्षेत्रों में नमक का लाभदायी असर ज्यादा होता है। मखरली मिट्टी में रोपण से पहले रोपण गड्ढ़ों में नमक का प्रयोग कठोर पटल और मखरली परत विघटित होने में सहायक सिद्ध हुआ है।

2) बाज़ारों में आज सूक्ष्म पोषकतत्वों का गाढ़ा मिश्रण उपलब्ध है। किंतु नारियल में उनकी प्रभावोत्पकता अभी तक साबित नहीं हुई है। सूक्ष्म पोषकतत्वों का प्रयोग मात्र इसके अभाव होने पर ही करना काफी है। मैगनीशियम के स्रोत के रूप में डोलोमाइट या मैगनीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है। मानसून की शुरुआत से पहले थालों में डोलोमाइट छिटककर मिला दें। अन्य उर्वरकों के साथ मैगनीशियम का प्रयोग करना हानिकर नहीं है। जहाँ भी बोरोन का अभाव पाया जाता है, बोरैक्स का प्रयोग प्रति ताड़ 250-300 ग्राम की दर पर किया जाए।

3) अच्छी तरह स्थापित बागों के लिए भी जुताई अत्यंत अनिवार्य है। यह मानसून शुरू होने के पहले करना चाहिए ताकि बारिश का पानी बहकर नष्ट न हो जाए। जुताई करने से खरपतवार और कीटों का आक्रमण भी कम हो जाता है। जुताई के समय कॉकचैफर भृंगों जैसे कीटों के मिट्टी में प्रसुप्त अवस्था के प्यूपे मिट्टी के बाहर निकाले जाते हैं जो पक्षियों जैसे परभक्षियों का आहार बनता है। तथापि लगातार जुताई करना भी हानिकर है।

**प्रश्नः** ***पलेवा क्या है? नारियल बागों में पलेवा करने के क्या क्या लाभ है?***

**उत्तरः** पलेवा से तात्पर्य है कोई भी जैव/कृत्रिम सामग्री जैसे घास-फूस, पत्ते, पौधे के अवशिष्ट, ढीली मिट्टी या प्लास्टिक शीट/फिल्म आदि जो बाष्पन और भूक्षरण से पानी के नष्ट को कम करने, खरपतवार की बढ़वार को नियंत्रित करने या पौधों की जड़ों को कम या अधिक तापमान से बचाने आदि के लिए मिट्टी की सतह पर रख देते हैं। कृत्रिम पलेवे से ज्यादा उपयुक्त जैव पलेवा है क्योंकि यह मिट्टी में सूक्ष्मजीवाणु प्रक्रियाएं त्वरित करता है और जैव पदार्थों की मात्रा बढ़ने से मिट्टी और अधिक उपजाऊ हो जाती है। यह पौधों

के लिए आवश्यक पोषकतत्व खासतौर पर सूक्ष्मपोषकतत्व उपलब्ध कराता है और मृदा की संरचना और बेहतर बना देता है। नारियल के तने से 2 मीटर की दूरी पर थालों में ऊपर उल्लिखित किसी भी जैव सामग्रियों का पलेवा कर सकता है। नारियल के लिए नारियल छिलका, कयर गूदा आदि पलेवा सामग्रियों का प्रयोग किया जा सकता है जिसका लाभ यह भी है कि यह अधिक समय तक आर्द्रता बनाए रखता है और नारियल के लिए अत्यंत अनिवार्य पोषक तत्व पोटैश भी उपलब्ध कराता है।

**प्रश्न:** ***ऐसा कहा जाता है कि ताड़ के चारों ओर बनाए गए गड्ढ़ों में नारियल छिलका, जैव अवशिष्ट तथा गोबर गाड़ने से जड़मुर्झा रोग होता है। क्या यह सच है?***

**उत्तर:** जी नहीं। कुछ किसानों के बीच जड़मुर्झा रोग के बारे में ऐसी गलत धारणा है। वास्तव में जड़मुर्झा का कारण फाइटोप्लास्मा है और यह एक गैर-घातक, कमज़ोर करने वाला रोग है जो ताड़ का उत्पादन तथा आंतरिक शक्ति को बुरी तरह प्रभावित करता है। प्रभावित ताड़ बेहतर प्रबंधन परिस्थितियों में ज्यादा फल देता है। गंभीर रूप से रोगग्रस्त, अलाभदायक ताड़ों को निकाल देना चाहिए जो उत्पादन के पहले वर्षों में प्रति वर्ष प्रति ताड़ 10 से कम फल देता है। वस्तुत: गड्ढ़ों में नारियल छिलका, जैव अवशिष्ट तथा गोबर गाड़ना रोगग्रस्त ताड़ों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए अपनाई जाने वाली बेहतर प्रबंधन रीतियाँ हैं।

**प्रश्न:** ***गुणकारी प्राणियों को बिना हानि पहुँचाए हम एरियोफाइड बरुथी पर नियंत्रण कैसे पा सकते हैं?***

**उत्तर:** नारियल बागानों में उपलब्ध बरुथी के कुदरती शत्रुओं को सुरक्षित रखने के लिए पौधा संरक्षण रासायनिकों का प्रयोग कम करें। कीटों के प्रबंधन हेतु पौधा संरक्षण एवं पोषण प्रबंधन को मिलाकर एकीकृत उपाय अपनाना अनुशंसित है। पौधा संरक्षण में 2 प्रतिशत नीमतेल-लहसुन-साबुन मिश्रण/ एज़ाडिरैक्टिन 4 मि.ली. प्रति लीटर की दर पर घोल बनाकर छिड़काया जाता है या 7.5 मि.ली.की दर पर 5 प्रतिशत एज़ाडिरैक्टिन तुल्य मात्रा में पानी मिलाकर तैयार किया गया नीमतेल युक्त दवा जड़ों द्वारा पिलाया जाता है। पोषण प्रबंधन में नाइट्रोजन-स्फुर-पोटेशियम उर्वरकों का संतुलित प्रयोग, जैव पदार्थों का पुन:चक्रण, नारियल थालों में उपयुक्त हरी खाद फसल उगाना व इसका वहीं मिलाना और मृदा नमी संरक्षण आदि अनुशंसित है।

**प्रश्न:** ***मैं अपने बाग में नारियल के पौधे लगाना चाहता हूँ। नारियल पौधों के बीच कितनी जगह छोड़नी चाहिए? इस तरह जगह छोड़ने का क्या महत्व है?***

**उत्तर:** नारियल पौधों के बीच का अंतरण पेड़ों की उत्पादकता को प्रभावित करता है। नारियल से अधिकतम उपज मिलने के लिए बाग में पेड़ों की संख्या ज्यादा नहीं होनी चाहिए। नारियल पेड़ों के लिए सामान्यत: संस्तुत अंतरण 7.5 मी. x 7.5 मी. है। रोपण के लिए विभिन्न प्रकार की अंतरण प्रणालियाँ जैसे कि चौकोर, त्रिकोणीय या समकोणीय प्रणालियाँ अपनाई जाती हैं। नारियल पेड़ों की संख्या रोपण प्रणाली पर निर्भर है। चौकोर प्रणाली में 7.5 मी. x 7.5 मी. अंतरण छोड़ा जाता है। त्रिकोणीय प्रणाली में नारियल पौधों के बीच 7.5 मी. और समकोणीय प्रणाली में 9 मी. x 6.5 मी. का अंतरण अपनाया जाता है। इस प्रणालियों में प्रति हेक्टर में क्रमश: 175 पेड़, 205 पेड़ तथा 170 पेड़ लगाए जा सकते हैं।

सूर्य प्रकाश, मृदा के पोषक तत्व तथा नमी के बेहतर उपयोग के लिए पेड़ों के बीच समुचित अंतरण आवश्यक है। इससे अंतरा और मिश्रित सस्यन के लिए पर्याप्त जगह मिलती है तथा पेड़ों के बीच संसाधनों के लिए ज्यादा स्पर्धा भी नहीं होगी। पेड़ों के बीच उचित दूरी बनाए रखने से आसपास के पेड़ों के पत्ते या जड़ें एक दूसरे से टकरा नहीं जाते हैं। उचित अंतरण से पेड़ों का झुकना और अपसामान्य बढ़ाव भी रोका जा सकता है। नारियल बाग में अंतरा/ मिश्रित सस्यन से अधिकतम आय भी मिलती है।

**प्रश्न: नारियल बाग में खरपतवारों को नष्ट कर देने के लिए ग्रामक्सोन का उपयोग करने का कोई दोष है या नहीं?**

**उत्तर:** नारियल बाग में अधिक विषैली खरपतवारनाशी ग्रामक्सोन का प्रयोग करने की सिफारिश नहीं की जाती है। खरपतवार नाशी ग्लैफोसेट पाँच मि.ली.पानी में घोलकर नारियल बाग में प्रयोग करना अधिक उपयुक्त पाया गया है।

# नारियल कृषकों को क्या करना चाहिए?

## अक्तूबर से दिसंबर तक

## अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह

**अक्तूबर**

2 से 3 इंच की गहराई में ताड़ के तने से 2 मी. की दूरी पर थालों में 40 कि.ग्रा. प्रति पेड़ की दर पर सूखा कम्पोस्ट/गोबर या 5 कि.ग्रा.कुक्कुट खाद जैसे जैव खाद डाल दें। उसे मिट्टी से ढक दें। प्रति हेक्टर 150 पौदों की दर पर, गुणवत्तापूर्ण पौदों का रोपण किया जाए। नई रोपित पौदों के गड्ढ़ों में बारिश का पानी जमने न दें। लौंग, जायफल, दालचीनी, काली मिर्च और केला जैसी बहुवर्षी अंतराफसलें लगाएं। बैकुलोवाइरस से उपचारित भृंगों को 15 भृंग प्रति हेक्टर की दर पर छोड़कर गैंडा भृंग पर नियंत्रण पा सकते हैं। यदि तना स्रवण रोग पाया जाए तो रोगबाधित ऊतक को निकालने के बाद घाव पर 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगा दें और गरम कोलतार का लेप लगाएं। यदि कलिका विगलन पाया जाए तो शिखर के सभी रोगबाधित ऊतकों को निकाल दें और 10 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण लगाकर उसे पोलीथीन से ढक दें ताकि सामान्य अंकुरण होने तक उसे बारिश के पानी से बचाया जा सके। बागान से खरपतवार निकाल दें।

**नवम्बर**

तना स्रवण रोग की तलाश करें। रोगग्रस्त पेड़ों के रोगबाधित ऊतक निकालकर वहाँ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं। यह सूखने पर गरम कोलतार लगाएं। प्रकोपित पेड़ को प्रति पेड़ 100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली. की दर पर 5 प्रतिशत कैलिक्सिन का घोल तीन महीनों के अंतर से जून, अक्तूबर एवं जनवरी में जड़ों द्वारा दें। प्रति वर्ष प्रति पेड़ 5 कि. ग्रा. की दर पर नीम की खली, उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ दें। बारिश के समय पानी बह जाने की व्यवस्था करके और गरमी के समय सिंचाई करके खेत की नमी नियमित रखें। नर्सरी से अनंकुरित बीजफलों और मृत पौधों को निकाल दें।

**दिसम्बर**

रेतीली और दुम्मट मिट्टी में मिट्टी के टीले बनायें। अन्य प्रकार की मिट्टियों में गुड़ाई या जुताई करें।

## आंध्र प्रदेश

**अक्तूबर**

मुख्य खेत में एक वर्षीय पौद रोपें। उर्वरकों की दूसरी मात्रा यानी प्रति वयस्क पेड़ 750 ग्राम यूरिया, 1300 ग्राम सिंगल सूपर फोस्फेट तथा 1250 ग्राम म्यूरियेट ऑफ पोटैश डालें।

**नवम्बर**

निचली भूमि में मुख्य खेत में एक वर्षीय पौदों की रोपाई करें। यदि कृष्णशीर्ष इल्लियों का प्रकोप हो तो पौदों के पत्तों के निचले भाग पर 0.2 प्रतिशत डाइक्लोर्वोस/0.05 प्रतिशत फोसलॉन से छिड़काव करें। वयस्क पेड़ों पर कीट

फसल अनुरक्षण

की अवस्था के अनुकूल विशेष परजीवियों को छोड़ दें। लाल ताड़ घुन ग्रस्त पेड़ों पर 1 प्रतिशत कार्बरिल इंजक्ट करें। अगर कीट तने से अंदर घुसते हैं तो तने के सारे छेद सिमेंट या प्लास्टर ऑफ पैरिस से बंद करें और इसे जमने दें। गैनोडेर्मा मुर्झा रोग बाधित पेड़ों से 2 मीटर की दूरी पर 30 से. मी. चौड़ी और 1 मीटर गहरी खाई खोदकर उन्हें स्वस्थ पेड़ों से अलग करें। प्रति पेड़ 100 मि. ली. पानी में 5 मि.ली. की दर पर 5 प्रतिशत कैलिक्सिन तीन महीनों के अंतर से एक वर्ष जड़ों द्वारा दें। बाग में फलीदार फसलें लगाएं। प्रतिवर्ष प्रति पेड़ 5 कि. ग्राम की दर पर नीमखली का प्रयोग करें। अक्तूबर में उर्वरक नहीं दिया गया है तो उर्वरकों की दूसरी मात्रा यानी प्रति पेड़ 750 ग्राम यूरिया, 1300 ग्राम सिंगल सूपर फोस्फेट तथा 1300 ग्राम म्यूरियेट ऑफ पोटेश डालें।

**दिसम्बर**

कृष्णशीर्ष इल्लियों से ग्रस्त छोटी पौदों पर पत्तों के निचले भाग पर 0.05% मैलाथियॉन या फॉसलॉन या 0.02 प्रतिशत डाइक्लोर्वोस का छिड़काव करें। नाशी जीव की अवस्था के मुताबिक परजीवियों को छोड़ दें जैसे लार्वे की तीसरी अवस्था में बेथिलिड (गोणियोज़स नेफेन्टिडिस) और प्यूपे की प्रारंभिक अवस्था में चैलसिडिड (ब्रेकीमेरिया नोसैटॉइ) को पेड़ों पर छोड़ दें। लार्वे की अवस्था में ब्रेकोनिड (ब्रेकन हेबेटर) एवं प्यूपे की अवस्था में इचन्युमोनिड (ज़ान्थोपिम्प्ला पंक्टाटा) जैसे परजीव्याभों का भी उपयोग किया जा सकता है। सभी अवस्थावाले कीट मौजूद हैं तो सारे परजीव्याभों को एकसाथ छोड़ना चाहिए। अगर कीटनाशियों का प्रयोग किया गया है तो छिड़काव के तीन हफ़्ते बाद परजीव्याभों को छोड़ा जाए।

लाल ताड़ घुन ग्रस्त पेड़ों पर प्रति पेड़ 1 प्रतिशत कार्बरिल का टीका लगायें। कीट प्रकोप की तीव्रता के अनुसार एक पेड़ के लिए करीब 1-1.5 लीटर कीटनाशक घोल की आवश्यकता पड़ती है। कीट के प्रकोप से शिखर की क्षति हो जाती है तो क्षतिग्रस्त भागों को हटाकर वहाँ कीटनाशक घोल डाला जाए। अगर कीट तने से अन्दर घुसते हैं तो सारे छेदों को सिमेंट या प्लास्टर ऑफ पैरिस से बंद करें। नारियल बाग में अन्तराफसल के रूप में लोबिया उगाया गया है तो उसकी फसल लें। ज़मीन पर हल चलायें और उसे परती छोड़ें।

## असम

**अक्तूबर**

यदि सितंबर में उर्वरक नहीं डाला है तो दूसरी मात्रा अभी डाल दें। कलिका विगलन रोग पाए जाने वाले क्षेत्रों में ताड़ों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का मानसूनोत्तर रोगनिरोधी छिड़काव शुरू कर दें। "क्लीरो-डेन्ड्रोन इन्फोरटुनैटम" खरपतवार गैंडा भृंग के प्रजनन स्थलों में डालें ताकि उसकी सूंडी तथा अंडा नष्ट कर सके। वर्ष में तीन बार सबसे अंदर के तीन पर्ण कक्षों को 250 ग्रा. चूर्णित मरोटी/नीम खली और तुल्य मात्रा में रेत के मिश्रण से भरें या 12 ग्रा/ताड़ की दर पर नैफ्थलीन बॉल रखें तथा उसे मिट्टी से ढक दें। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें। यदि आवश्यक हो तो नर्सरी में सिंचाई करें। यदि तना स्रवण रोग से ग्रस्त हो तो रोगबाधित ऊतकों को निकाल दें और वहाँ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं और उसके ऊपर कोलतार लगाएं। गुच्छों का झुकना रोकने के लिए उसे बाँधें या टेक लगाएं।

**नवम्बर**

गंभीर रूप से गेनोडेर्मा रोग ग्रस्त पेड़ों को हटा दें तथा रोगी पेड़ों से 2 मीटर की दूरी पर 30 से. मी. चौड़ी और 1 मीटर गहरी खाई खोद कर उन्हें अलग करें। 5 प्रतिशत कैलिक्सिन (100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली.) जड़ों द्वारा दें और प्रति पेड़ 5 कि. ग्रा. की दर पर नीम की खली डालें। शिखर रोधन रोग ग्रस्त पेड़ों के लिए प्रति पेड़ 50 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग वर्ष में दो बार करें।

**दिसम्बर**

बाग की सिंचाई करें। चुनिंदा मातृवृक्षों से बीजफल एकत्रित करें और सूखे ठंडे स्थान पर उनका भंडारण करें। चूहे का आक्रमण पाया जाता है तो घरों और आसपास के फसल खेतों (नारियल व अन्य बागवानी बागों सहित) समेत पूरे इलाके में एक सुनियोजित सामूहिक कार्रवाई आयोजित करें। चूहों के खिलाफ जहरीले चारे, चूहेदान आदि का प्रयोग करें। टिन के चादर से बनाया हुआ चूहा कोन धरती से 2 मीटर की ऊँचाई पर तने पर रखने से चूहे का पेड़ पर प्रवेश रोका जा सकता है। समय समय पर पेड़ों के शिखर साफ करें।

## बिहार / झारखंड़ / मध्यप्रदेश / छत्तीसगढ़

**अक्तूबर**

बागों से खरपतवार निकाल दें। यदि उर्वरक तीन भागों में डाला जा रहा है तो उर्वरकों की दूसरी मात्रा 250 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सूपर फोस्फेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश प्रति ताड़ की दर से मानसून के बाद डाल दें। ताड़ के 1.8 मीटर के घेरे में बनाए गए थालों में उर्वरक डाल दें और मिट्टी से ढक दें। उर्वरक डालने के बाद

सिंचाई करें। सर्दी के मौसम में रोगाक्रमण से बचने के लिए शिखर की सफाई करें। सर्दी के मौसम में ब्लाइटॉक्स 5 ग्राम/ लीटर और डाइथेन एम 45 प्रति लीटर 2 ग्रा. की दर से शिखर और गुच्छों पर बारी-बारी से डालें और यह फरवरी तक जारी रखें ताकि द्वितीय रोगाक्रमण से बच सके। अक्तूबर के मध्य में उर्वरक डालने के बाद पलेवा फसल के रूप में नारियल थालों में कुलथी या लोबिए का बीज बोएं। इससे अनुकूल सूक्ष्म जलवायु, नमी संरक्षण और मृदा में नत्रजन स्थायीकरण बरकरार रखे जा सकते हैं।

**नवम्बर**

बाग से सारे खरपतवार निकाल दें। नए रोपित बीजपौधों के गरदनी क्षेत्र से मिट्टी हटा दें। उर्वरकों की पहली मात्रा डालें। जाड़े के प्रभाव से पौधों के संरक्षण के लिए छाया प्रदान करें। दीमकों के प्रकोप की निगरानी करें। यदि पाया जाए तो पीड़ित क्षेत्र से दीमकों की गैलरी हटा दें और 20-25 दिनों के अंतराल में दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से शराबोर कर दें। बाग की सिंचाई करें। अंतराफसलों के रूप में सब्जियाँ उगाएं।

**दिसम्बर**

ज़रूरत के मुताबिक सिंचाई करें। नए रोपित पौधों के गड्ढ़ों तथा पेड़ों के थालों को खरपतवार से मुक्त रखें। पौधों के गर्दन भाग से मिट्टी हटायें। पौदों को आवश्यक छाया आदि प्रदान करके कड़ाके की सर्दी से संरक्षण दें। स्थान विशेष के लिए उपयुक्त किसी भी शीतकालीन सब्जी की खेती करें। सर्दियों के मौसम में होने वाले रोग प्रकोप से बचने के लिए ब्लाइटॉक्स 5 ग्राम प्रति लीटर या डाइथेन एम 45 प्रति लीटर 2 ग्राम की दर से शिखर और गुच्छों में बारी बारी से लगाएं और यह फरवरी तक जारी रखें। दीमक के आक्रमण की जाँच करें और उसकी रोकथाम हेतु 20-25 दिनों के अंतर से दो बार मृदा को 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से शराबोर कर दें। प्रकोपित तने पर उपर्युक्त रसायन से पुचारा लगाएं। हरे पत्तों तथा अन्य जीवंत भागों को नहीं काटना चाहिए।

## कर्नाटक

**अक्तूबर**

पौदों के रोपण के लिए भूमि तैयार करें। अच्छे-से न बढ़ने वाली पौदों को निकाल दें। उर्वरक की दूसरी मात्रा का प्रयोग करें। सूखे और पुराने शूकीछदों को निकाल कर शिखर को साफ करें। गैंड़ा भृंग के नियंत्रणोपाय के रूप में "क्लीरोडेन्ड्रोन इन्फोरटुनैटम" खरपतवार उसके प्रजनन स्थल पर डालें ताकि उसकी सूंडी तथा अंडा नष्ट कर सके। वर्ष में तीन बार सबसे अंदर के तीन पर्ण कक्षों को 250 ग्रा. चूर्णित मरोटी/नीम खली तथा तुल्य मात्रा में मिट्टी के मिश्रण से भरें या नैफ्थलीन बॉल (12 ग्रा./ताड़) रखें तथा मिट्टी से ढक दें। खाद गड्ढ़ों तथा अन्य संभव प्रजनन स्थानों को 0.1 प्रतिशत कार्बेरिल से उपचारित करें जिसे हर तीन महीने में दोहराना होगा। रोगनिरोधी उपाय के रूप में, कलिका विगलन की रोकथाम के लिए बोर्डो मिश्रण का छिड़काव भी बेहतर है।

**नवम्बर**

बाग में जुताई करें और खरपतवार निकाल दें। यदि सूखे का मौसम रहा तो सिंचाई शुरू करें। यदि अक्तूबर में उर्वरकों की दूसरी मात्रा नहीं डाली हो तो वह डाल दें। पिछले महीनों में शिखर की सफाई नहीं की हो तो अब करें। पिछले महीने बोर्डो मिश्रण नहीं छिड़का है तो वह भी करें।

**दिसम्बर**

छोटी पौदों की सिंचाई करें। नर्सरी को खरपतवार से मुक्त रखें तथा कम बाढ़ की पौदों को निकाल दें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

## केरल / लक्षद्वीप

**अक्तूबर**

तना स्रवण की जाँच करें। यदि तना स्रवण रोग पाएं तो रोगग्रस्त ऊतकों को निकाल दें और वहाँ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं। जब यह सूख जाएगा, उस पर गरम कोलतार लगाएं। उर्वरक की दूसरी मात्रा के साथ प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. नीम की खली डालें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर

पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

**नवम्बर**

छोटी पौदों को खाद दें। पेड़ों के वर्षाकालोत्तर रोग निरोधी छिड़काव शुरू करें। कम बाढ़ की तथा देर से अंकुरित पौदों को नर्सरी से निकाल दें। नर्सरी को आवश्यक छाया प्रदान करें। बीजफल इकट्ठा करने के लिए मातृवृक्षों का चयन करें। बागों में जहाँ सिंचाई करके सब्जियाँ उगायी जाती हैं, सब्जियों की पौदों की प्रतिरोपाई करें। जड़ (मुर्झा) रोग से प्रकोपित प्रदेशों में पत्ता सड़न रोग को नियंत्रित करने के लिए तर्कुपत्ता और सबसे भीतर के पूरी तरह खुले पत्तों के सड़े हुए भागों को काटकर हटाके हेक्साकोनाज़ोल (कोंटफ 500) प्रति 300 मि. ली. पानी में 2 मि. ली. की दर पर प्रति पेड़ डालें। कोंपल के नीचे चारों ओर भी 20 ग्रा. फॉरेट 10 जी 200 ग्रा. रेत मिलाकर डालें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

**दिसम्बर**

बीजफल इकट्ठा करने के लिए इस महीने मातृवृक्षों का चयन करें। बागों में पहले ढेर लगाये मिट्टी के टीलों को गिराके समतल करें। मृदा की संरचना को सुधारने हेतु बलुई मृदावाले बागों में पेड़ों के चारों ओर चिकनी मिट्टी तथा चिकनी मिट्टीवाले बागों में रेत डालें। सिंचाई की नलियों की सफ़ाई करें। पेड़ों के शिखरों की समय-समय पर सफाई करें। नई रोपित तथा छोटी पौदों को छाया प्रदान करें।

गैंडा भृंग तथा लाल ताड़ घुन के आक्रमण के खिलाफ बाहरी 2-3 पत्तों के कक्षों में सेविडॉल 8 जी (25 ग्रा.) तथा महीन रेत (200 ग्रा.) के मिश्रण से भरें। सिंचित बागों में उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा का एक चौथाई भाग डालें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

## महाराष्ट्र / गोवा / गुजरात

**अक्तूबर**

बागों की जुताई करें तथा पेड़ों की सिंचाई हेतु आवश्यक नालों का निर्माण करें। बलुई मिट्टी में मिट्टी का ढेर लगायें। नर्सरी से अनंकुरित फलों तथा मृत कल्लों को निकाल दें।

**नवम्बर**

बाग की निराई-गुड़ाई करें। नालों की सफाई करें। पेड़ों पर 1% बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

**दिसम्बर**

75 से. मी. व्यासीय तथा 15 से. मी. गहरे गड्ढ़े खोद कर ज़मीकंद, अरवी आदि रोपें। इन गड्ढ़ों के बीच की दूरी 100 से. मी. होनी चाहिए। रोपाई से पूर्व गड्ढ़ों में फार्म अवशिष्ट डालकर जला दें। बागों में पहले ही ढेर लगाये गये टीलों को गिरा दें।

## उड़ीसा

**अक्तूबर**

नारियल के थालों में हरी खाद फसलों के बीज बोना शुरू कर दें। नारियल के थालों में हरे पत्ते की खाद मिला दें। मौसमी अंतराफसलें और सब्जियाँ लगाएं/बोएं। नर्सरी से सारे खरपतवार निकाल दें। यदि रोग-कीटों का आक्रमण पाया जाए तो पौधा संरक्षण के लिए उपयुक्त रासायनिक पदार्थों का प्रयोग करें। शिखर को साफ करें और जैव खाद डाल दें। नारियल तथा अंतराफसलों के लिए उपयुक्त अनुरक्षण उपाय अपनाएं।

**नवम्बर**

निचले क्षेत्रों में नमी संरक्षण हेतु जुताई करें। घासपात तथा खरपतवार निकालकर जला दें। शीतकालीन सब्जियों की पौदों की प्रतिरोपाई करें।

**दिसम्बर**

मौसमी अंतरासस्य लगाएं। नारियल व अंतरासस्यों की सिंचाई करें। हरी

खाद डालें। कयर गूदा/छिलके से थालों को पलवा करें। कीट/रोग के अनुसार पौधा संरक्षक रसायनों का प्रयोग करें। अगर एरियोफाइड बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 7.5 मि.ली. की दर पर 5% एज़ाडिरैक्टिन समान मात्रा में पानी में घोलकर जड़ों द्वारा दें। शिखर की सफाई करें। नारियल व अंतरासस्यों का अनुरक्षण कार्य जारी रखें।

## त्रिपुरा

**अक्तूबर**

पिछले महीने शिखरों की सफ़ाई नहीं की गयी है तो इस महीने करें। पिछले महीने पौधा संरक्षण रसायनों तथा उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया गया है तो इस महीने करें।

**नवम्बर**

अनावश्यक झाड़ियाँ काटकर तथा निराई-गुड़ाई करके पूरे बाग की सफ़ाई करें। सूर्य की तेज़ धूप से बचाने के लिए नये रोपित पौधों को छाया प्रदान करें। नमी संरक्षण हेतु पेड़ों के थालों में सूखे पत्ते तथा नारियल छिलके से पलेवा करें। दीमक की रोकथाम हेतु नर्सरी में प्रकोप की गंभीरता के अनुसार 20-25 दिनों के बीच दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से शराबोर कर दें। प्रकोपित तने पर उपर्युक्त रसायन से पुचारा लगाएं।

**दिसम्बर**

पेड़ों की सिंचाई करें। अगले वर्ष के लिए बीजफल एकत्रित करने हेतु मातृवृक्षों का अब चयन करें। नये रोपित पौधों को सूर्य की तेज़ धूप से बचाने हेतु दक्षिण-पश्चिम दिशा में भागिक रूप से छाया प्रदान करें।

## पश्चिम बंगाल

**अक्तूबर**

हरी खाद फसलों को जोतकर मिट्टी में मिला दें। यदि पिछले महीने जैव खाद नहीं डाली है तो 40 कि.ग्रा. सूखा गोबर/सूखा कम्पोस्ट या 20 कि.ग्रा. वर्मी कम्पोस्ट प्रति वयस्क ताड़ की दर पर थाले में पेड़ से 1.5 से 2 मी. की दूरी पर 2-3 इंच गहराई में डाल दें और उसे मिट्टी से ढक दें। बीच की जगहों पर जुताई करें और सर्दी के मौसम में उगने वाली सब्जियाँ, तिलहन या दलहन फसलों का रोपण करें। खासतौर से बंगाल के उत्तर भाग में शिखर रोधन की जाँच करें। यदि यह पाया जाता है तो बोराक्स 100 ग्राम प्रति ताड़ की दर से डालें। नर्सरी से खरपतवार हाथ से निकाल दें और अवयस्क बीजपौधों को भागिक रूप से छाया देने की व्यवस्था करें। उपयुक्त टेक देकर नए नए लगाए गए बीजपौधों को सहारा दें। गुच्छों का झुक जाना रोकने के लिए उसे अच्छी तरह बाँधें या टेक दें। परिपक्व फलों की तुड़ाई शुरू कर दें। कीटों के आक्रमण या रोग लक्षण की जाँच करें। गैंडा भृंग को भृंग अंकुश से निकाल कर मार डालें। वर्ष में तीन बार 250 ग्राम मरोट्टी/नीमखली चूर्ण 250 ग्राम महीन रेत के साथ मिश्रित करके ऊपर के तीन पर्ण कक्षों को भरें या प्रति पेड़ 12 ग्राम नैफ्थलीन बॉल्स रखकर रेत से ढक दें। ताड़ों में कलिका विगलन की जाँच करें। यदि कलिका विगलन पाया जाय तो रोगग्रस्त भागों को निकाल दें, बोर्डो पेस्ट लगाएं और पोलीथीन शीट से या प्लास्टिक बकेट से ढक दें। आसपास के ताड़ों/बीजपौधों पर 1.0 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें। यदि तना स्रवण पाया जाए तो रोगग्रस्त ऊतकों को निकाल दें और वहाँ 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं और अगले दिन कोलतार का प्रयोग करें। तीन महीने में एक बार 5 प्रतिशत कैलिक्सिन (5 मि. ली. 100 मि. लीटर पानी में) जड़ों द्वारा पिला दें और उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग करें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

**नवम्बर**

उर्वरकों की दूसरी मात्रा (अक्तूबर के महीने में उर्वरक नहीं डाले तो) डालें। नर्सरी से कम बाढ़ के तथा देर से अंकुरित पौधों को निकाल दें।

**दिसम्बर**

फलों की तुड़ाई जारी रखें। खादों पर कीटनाशी का प्रयोग करें। कम बाढ़ के कमज़ोर पौधों को नर्सरी से निकाल दें और नर्सरी को खरपतवार से मुक्त रखें। हफ़्ते में एक बार नर्सरी की सिंचाई करें।

# विश्व नारियल दिवस 2015 समारोह विजयवाड़ा में संपन्न

नारियल विकास बोर्ड के तत्वावधान में आँध्र प्रदेश के विजयवाड़ा के स्वर्ण वेदिका हॉल में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विश्व नारियल दिवस समारोह का उद्घाटन माननीय सांसद और नाविबो सदस्य श्री तोट्टा नरसिंहम ने किया। बोर्ड ने यह कार्यक्रम आंध्र प्रदेश के बागवानी विभाग के सहायोग से आयोजित किया था जिसका मुख्य विषय 'परिवार के पोषण, स्वास्थ्य और कल्याण के लिए नारियल' था। श्री तोट्टा नरसिंहम ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि नारियल भारत का सबसे प्राचीन और धार्मिक फसल है।

*माननीय सांसद और नाविबो सदस्य श्री तोट्टा नरसिंहम विश्व नारियल दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए*

उन्होंने नीरा को आबकारी अधिनियम से छूट दिलाना, नारियल बीमा, न्यूनतम समर्थन भाव, जैविक नारियल खेती आदि जैसी आँध्र प्रदेश के नारियल किसानों की समस्याएं माननीय आध्र प्रदेश मुख्यमंत्री श्री एन चंद्रबाबू नायिडु तक पहुँचाने का वादा किया।

नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे ने अपने मुख्य भाषण में कहा कि अगर केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश एक साथ मिलकर नीरा योजना कार्यान्वित करके नीरा का उत्पादन और विपणन शुरू करेंगे तो भारत नीरा शक्कर के निर्यात में विश्व शक्ति बन जाएंगे। आंध्र प्रदेश के किसान नीरा और इसके मूल्यवर्धित उत्पादों से अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने राज्य सरकार से अनुरोध किया कि राज्य में नीरा टैप्पिंग संभव बनाने के लिए इस संबंध में उचित नीति निर्णय लें। भारत नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन में इंडोनेशिया, फिलिप्पीन्स और थाईलैंड से बहुत पीछे है। इंडोनेशिया 12000 करोड़ मूल्य की नीरा का निर्यात करता है। केवल 0.89 लाख हेक्टर में नारियल

*बोर्ड की तेलुगु पत्रिका भारतीय कोब्बारि पत्रिका का विमोचन*

की खेती करने वाले थाईलैंड नारियल के कई मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन कर रहा है। भारत में कुल 21 लाख हेक्टर ज़मीन में नारियल की खेती की जाती है जिसमें से आंध्र प्रदेश का हिस्सा 1.22 लाख हेक्टर है। अगर आंध्र प्रदेश सही तरीके से नारियल के उत्पादन और मूल्यवर्धन करेंगे तो आंध्र प्रदेश अकेले थाईलैंड को पीछे छोड़ सकता है। उन्होंने भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की घोषणा के अनुसार मेक इन इंडिया अभियान में हिस्सा बनने के लिए किसानों को आह्वान दिया। अन्य बागवानी फसलों से भिन्न नारियल का हरेक हिस्सा उपयोगी है। यूएसए में नारियल दूध से बने 65 तरह के उत्पाद उपलब्ध है जो "सो डिलिशियस डायरी फ्री" कंपनी से उत्पादित होते हैं। भले ही एलोपथी, होमियोपथी और आयुर्वेद में एलज़ाइमेर्स रोग के लिए कोई दवा उपलब्ध नहीं है, वर्जिन नारियल तेल एलज़ाइमेर्स रोग की इलाज के लिए बेहतरीन दवा है। कई विकसित देशों में नारियल दूध का व्यापक उपयोग होता है। केरल और तमिलनाडु एवं कर्नाटक के कुछ जिलों में खाना पकाने के लिए नारियल तेल का इस्तेमाल होता है। भारत के 630 जिलों में नारियल दूध का उपयोग होता है। इसलिए सभी नारियल उत्पादक कंपनियों और फेडरेशनों को नारियल दूध के उत्पादन पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। केरल के एक आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज द्वारा चलाए गए वैज्ञानिक अध्ययन से यह साबित हुआ है कि नारियल दूध से बनती दही मधुमेह को रोक सकता है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन कार्यरत राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान (NIFTEM) ने इसी प्रकार का एक स्वादिष्ठ उत्पाद नारियल आइसक्रीम तैयार किया है।

*सभा का दृश्य*

*बोर्ड के स्टाल का दृश्य*

नारियल उत्पादकों द्वारा सामना की जा रही प्रमुख समस्या है बढ़िया रोपण सामग्रियों की कमी। यद्यपि प्रति वर्ष एक करोड़ नारियल बीज पौधों की ज़रूरत पड़ती है, सभी स्रोतों से मात्र 35 लाख बीजपौधों का ही हम उत्पादन कर पा रहे हैं। यह इस मुद्दे की ओर खासतौर पर इशारा करता है कि नारियल के क्षेत्र में ऊतक संवर्धन प्रविधि अत्यंत अनिवार्य हो गया है।

डॉ.वाई.एस.आर बागवानी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.बी.एम.सी रेड्डि ने अपने विशेष भाषण में नारियल दूध, नारियल पानी, नारियल तेल आदि के पौष्टिक गुणों के बारे में व्याख्या दी। उन्होंने बताया कि नारियल तेल का आधा हिस्सा संतृप्त वसा अम्ल-लॉरिक अम्ल से भरपूर है। आगे उन्होंने यांत्रिकीकरण, मूल्यवर्धन, जैव खेती, पैकिंग और लेबलिंग पहलुएं, बारानी स्थितियों के लिए उचित क्लोन विकसित करने के लिए श्रीकाकुलम जिले के

उड्डनम क्षेत्र में बारानी स्थितियों में अच्छी तरह बढ़ने वाले नारियल क्लोन के लिए सर्वेक्षण जैसी पहलुओं पर बात की। उन्होंने आगे बताया कि बागवानी अनुसंधान स्टेशन, अंबाजिपेटा ने वर्ष 2014-15 के लिए चौधरी देवीलाल आउटस्टैंडिंग एआईसीआरपी पुरस्कार ग्रहण किया है। आगे उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि आंध्र प्रदेश एक तटीय राज्य होने के कारण नारियल की खेती बढ़ाने और बड़े पैमाने पर नीरा उत्पादित करने के लिए यहाँ अच्छे अवसर उपलब्ध हैं।

2 सितंबर जो एपीसीसी का स्थापना दिवस है, को नारियल दिवस के रूप में मनाने का निर्णय एशियन और पसफिक कोकनट कम्यूनिटी(एपीसीसी) ने लिया था। एपीसीसी 18 सदस्य देशों का एक अंतरशासकीय संगठन है जो सदस्य देशों की अधिकतम आर्थिक उन्नति को लक्षित करके नारियल संबंधी विकासात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देने, समन्वित करने और इसमें सामंजस्य लाने के लिए कार्यरत है। भारत सहित सभी प्रमुख नारियल उत्पादक देश एपीसीसी के सदस्य हैं। समारोह मनाने का लक्ष्य सदस्य देशों में नारियल की अहमियत और गरीबी उन्मूलन में इसकी संभावनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना, निवेश बढ़ाना और नारियल उद्योग का विकास करना है।

सभी नारियल उत्पादक राज्यों से तकरीबन 500 किसानों ने समारोह में भाग लिया जिसमें से 75 प्रतिशत किसान आंध्र प्रदेश से थे। यह समारोह नारियल

*बोर्ड के स्टाल का दृश्य*

किसानों को बोर्ड की नई पहलों के बारे में आँखोंदेखी जानकारी हासिल करने का बेहतरीन मंच प्रदान किया। बोर्ड ने यहाँ पर एक प्रदर्शनी भी लगाई जिसमें नारियल क्षेत्र की नवीन प्रौद्योगिकियों और नीरा सहित नारियल के मूल्यवर्धित उत्पाद प्रदर्शित किए। इस अवसर पर विविध नारियल उत्पादक कंपनियों द्वारा उत्पादित डाब आइसक्रीम और नीरा एवं इसके मूल्यवर्धित उत्पाद वितरित किए गए। प्रदर्शनी में केरल के चार नारियल उत्पादक कंपनियों ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।

श्री तोट्टा नरसिंहम, सांसद ने इस अवसर पर नारियल पत्रिका का तेलुगु अंक विमोचित किया। डॉ.वाई.एस.आर बागवानी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.बी.एम.सी रेड्डि ने नीरा और नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण पर नाविबो द्वारा निकाला लीफलेट विमोचित किया। बागवानी अनुसंधान केन्द्र, अंबाजिपेटा द्वारा प्रकाशित लीफलेट नारियल का वैज्ञानिक प्रबंधन भी इस अवसर पर विमोचित किया।

श्री जोहर खान, अध्यक्ष, नारियल उत्पादक कंपनी, इचापुरम, श्रीकाकुलम जिला, डॉ.राजु, अध्यक्ष, नारियल उत्पादक कंपनी, पूर्व गोदावरी जिला और श्री लक्ष्मीपति राजु, धनंजया नारियल उत्पादक कंपनी, पूर्व गोदावरी जिला ने आंध्र प्रदेश में किसानों द्वारा सामना की जा रही विविध समस्याओं के बारे में बताया।

उद्घाटन सत्र के बाद आंध्र प्रदेश में नारियल का परिदृश्य-संभावनाएं और भविष्य, परिवार के पोषण, स्वास्थ्य और कल्याण के लिए नारियल, नारियल के कीट एवं रोग, प्रमुख मूल्यवर्धित नारियल उत्पाद, नारियल प्रौद्योगिकी मिशन से सहायता और कृषक उत्पादक संगठनों की संभावनाएं और भविष्य विषय पर दो तकनीकी सत्र भी संपन्न हुआ। श्री बी.पांडु रंगा, उप निदेशक, बागवानी ने धन्यवाद अदा किया।

# गुजरात में नारियल किसान और उद्यमी सम्मेलन

## *गुजरात में नारियल की संभाव्यता का लाभ उठाने के लिए गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के उत्पादन और मूल्य वर्धन में गति लाना चाहिए*

*माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए*

गुजरात के जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय सभागार में 12 सितंबर 2015 को संपन्न नारियल किसान और उद्यमी सम्मेलन में गुजरात में नारियल की संभाव्यता का पूरा का पूरा लाभ उठाने के लिए गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के उत्पादन और मूल्य वर्धन में गति लाने पर ज़ोर दिया गया। नारियल विकास बोर्ड ने जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय और गुजरात कृषि और सहकारिता विभाग के सहयोग से इसका आयोजन किया।

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरियाजी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। भारत में नारियल उद्योग की कुल वार्षिक टर्न ओवर 20,000 करोड़ रुपए और निर्यात 2,600 करोड़ रुपए है। गुजरात में मात्र डाब का उत्पादन ही होता है। इसलिए किसानों को नारियल विकास बोर्ड की मूल्य वर्धन प्रणालियों को सीखना चाहिए। श्री कुंदरियाजी ने आगे बताया कि राज्य में एक राज्य केंद्र और एक प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म स्थापित करने के लिए बोर्ड के अनुरोध पर सरकार अनुकूल रूप से विचार करेंगे। केंद्रीय सरकार छत्र बीमा योजना के प्रस्ताव पर विचार कर रही है जिससे किसानों के परिवार, फसल, कृषि उपकरण आदि को सुरक्षा मिलेगी।

जूनागढ़ के सांसद माननीय श्री राजेशभाई नरेनभाई चूडासमा जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि गुजरात में नारियल विकास बोर्ड का एक राज्य केंद्र और प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म स्थापित करने का प्रस्ताव केंद्रीय सरकार के अनुमोदन के लिए लंबित था। उन्होंने राज्य में बेहतर नारियल उत्पादन प्राप्त करने हेतु आवश्यक समर्थन देने के लिए नारियल विकास बोर्ड से आह्वान किया। माननीय गुजरात कृषि मंत्री श्री जशाभाई बारड ने कहा कि किसानों को बागवानी फसलों की बुवाई करने हेतु प्रति हेक्टर 6500 रुपए की सहायता जो प्राप्त होती है वह बढ़ाने के लिए केंद्रीय सरकार से मांग करेंगे।

नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के जोस भाप्रसे ने अपने मुख्य भाषण में कहा कि समूचे देश में गुजरात नारियल के खेतीगत क्षेत्र में छठे और उत्पादन में सातवें स्थान पर है। अधिकांश नारियल बाग तटीय सौराष्ट्र के जूनागढ़,

*1. श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया 2. श्री राजेशभाई नरेनभाई चूडासमा 3. श्री जशाभाई भानाभाई बारड 4. डॉ.ए.आर.पाठक 5. श्री टी.के.जोस भाप्रसे*

गिर सोमनाथ और भावनगर जिलों में स्थित हैं। राज्य में प्रति वर्ष लगभग 30 करोड़ नारियल का उत्पादन होता है। अहमदाबाद में प्रति दिन औसतन 50,000 नारियल दूसरे राज्यों से आते हैं जो कच्चे नारियल का दूसरा सबसे बड़ा बाज़ार है। मांग्रोल और वेरावेल राज्य के प्रमुख कच्चे नारियल उत्पाद क्षेत्र हैं। वर्ष 2003-04 में नारियल की खेती 16,000 हेक्टर में होती थी जो वर्ष 2013-14 में 98 प्रतिशत रिकोर्ड वृद्धि के साथ 31,600 हेक्टर में पहुँची। अकेले तटीय सौराष्ट्र के ग्यारह जिलों में और दो लाख हेक्टर में भी नारियल की खेती की जा सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्रीय सरकार से अनुमोदन प्राप्त होने और राज्य सरकार भूमि आबंटित करने के बाद नारियल विकास बोर्ड गुजरात में एक प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म और एक राज्य केंद्र खोलेगा।

जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.ए.आर पाठक ने कहा कि नारियल एक दीर्घकालीन फसल है जो 50 से 60 वर्ष तक बढ़ता है। इसलिए रोपण सामग्री उच्च गुणवत्ता की होना आवश्यक है। गुजरात में नारियल का खेतीगत क्षेत्र बढ़ाने के लिए अनेक संभावनाएं हैं। लेकिन बढ़िया पौधों की उपलब्धता बड़ी समस्या है। जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय को जूनागढ़ जिले के मांग्रोल और भावनगर जिले के महुआ में दो बीज उत्पादन फार्म हैं। फिर भी लगभग दो लाख पौधों की मांग के मुकाबले इन फार्मों में प्रति वर्ष लगभग 15000 और 8,000 पौधों का ही उत्पादन होता है। उन्होंने आगे बताया कि महुआ फार्म प्रति वर्ष लगभग एक लाख पौधों का वितरण शुरू करेंगे लेकिन इसके लिए कम से कम दो वर्ष लगेगा। अब नारियल पौध उत्पादन में टिश्यू कल्चर तकनीकी पर अनुसंधान हो रहा है। यदि सफल हो जाए तो पौध उत्पादन में कम ही समय लगेगा।

*माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया बोर्ड के स्टाल में*

श्री जीतुभाई हिरपरा, मेयर, जूनागढ़ नगर निगम, श्री कनुभाई मेपाभाई भलाला, भूतपूर्व कृषि उप मंत्री, गुजरात, श्रीमती ज्योतिबेन वाघानी, भूतपूर्व मेयर, जूनागढ़ और गुजरात कृषि विभाग, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय और नारियल विकास बोर्ड के अधिकारियों और गुजरात के लगभग 400 किसानों ने सम्मेलन में भाग लिया।

सम्मेलन के बाद संपन्न तकनीकी सत्र में तकनीकी विशेषज्ञों ने गुजरात में नारियल के परिदृश्य एवं संभावना, नाविबो योजनाएं, भारत में नारियल प्रसंस्करण उद्योग और गुजरात में इसकी संभावना, नारियल की प्रौद्योगिकी मिशन के ज़रिए नारियल के मूल्य वर्धन के लिए सहायता, गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री और नारियल बागों में उपयुक्त अंतराफसलों पर बात की।

*सभा का दृश्य*

# बोर्ड ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दक्षिण अफ्रीका को नीरा और वर्जिन नारियल तेल की आपूर्ति की

दक्षिण अफ्रीका के भारतीय उच्च आयोग के उच्च आयुक्त श्रीमती रुचि घनश्याम आईएफएस के अनुरोध पर, नारियल विकास बोर्ड ने भारत के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2015 को दक्षिण अफ्रीका में आयोजित समारोह में और भारत गोल्फ डे समारोह में वितरित करने केलिए नीरा, वर्जिन नारियल तेल तथा अन्य नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पाद दक्षिण अफ्रीका को भेज दिया।

बोर्ड ने नारियल तेल, नीरा शहद, शक्कर और अन्य मूल्य वर्धित उत्पाद जैसेकि मसालेदार गुड़, गुड़, वर्जिन नारियल तेल और नारियल चिप्स तथा इन उत्पादों के संबंध में संवर्धनात्मक साहित्य तथा ब्रोशर सहित कुल 260 किलो नारियल आधारित सामग्री दक्षिण अफ्रीका को भेज दी। इसमें केराटेक के वर्जिन नारियल तेल, कोटुंगल्लूर नारियल उत्पादक कंपनी के नारियल चिप्स तथा नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, वाष़क्कुलम, आलुवा द्वारा विकसित नीरा और नीरा उत्पाद शामिल थे।

इस सहयोग से यह उम्मीद बाँधी है कि भारत के मूल्यवर्धित नारियल उत्पाद वैश्विक बाज़ार में भी अपनी जगह बना लेंगे जिसका फायदा अंततः भारत के नारियल किसानों को ही मिलेगा। इस आदान-प्रदान से भारत के नारियल उत्पादकों एवं उनके कृषक उत्पादक संगठनों और दक्षिण अफ्रीका के संभावी उपभोक्ताओं के बीच लाभदायक संबंध बन जाएगा।

# मंगलूरु में नारियल किसानों तथा उद्यमियों का सम्मेलन

नारियल विकास बोर्ड ने 11 जुलाई 2015 को फिशरीस कॉलज, मंगलूरु में नारियल किसानों और उद्यमियों का सम्मेलन आयोजित किया। नारियल उत्पादक समितियों, फेडरेशनों तथा कंपनियों के प्रतिनिधिगण और उद्यमियों सहित तकरीबन 250 लोगों ने बैठक में भाग लिया। माननीय सांसद एवं बोर्ड के सदस्य श्री नलिन कुमार काटील ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने जिले में नारियल पार्क स्थापित करने की आवश्यकता पर बात की। उन्होंने कहा कि नारियल क्षेत्र के विकास एवं किसान उत्पादक संगठनों की स्थापना के लिए सभी समर्थन प्रदान करेंगे।

*माननीय सांसद और नाविबो सदस्य श्री नलिन कुमार काटील नारियल किसानों तथा उद्यमियों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए*

श्री टी के जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नाविबो ने विषयप्रवेश भाषण में नारियल उत्पादक

*नारियल किसानों तथा उद्यमियों के सम्मेलन में बोर्ड के स्टाल का दृश्य*

संगठनों के ज़रिए नारियल के मूल्य वर्धन एवं निर्यात की बृहत् संभावनाओं के बारे में बताया। भारत में नारियल दूध, क्रीम आदि नारियल के मूल्य वर्धित उत्पाद इंडोनेशिया, थाइलैंड आदि देशों से आयातित किए जाते हैं। केरल, तमिलनाडु और अन्य पड़ोसी राज्यों में नीरा उतारने के लिए अनुमति है। परंतु कर्नाटक सरकार ने नीरा उत्पादन की अनुमति देने के लिए आबकारी अधिनियम का संशोधन नहीं किया है। नीरा उत्पादन और मूल्य वर्धन से किसानों की आय में वृद्धि होगी। कर्नाटक के तुम्कूर, हासन तथा चित्रदुर्ग जिलों का कुल नारियल खेतीगत क्षेत्र , श्रीलंका के कुल नारियल खेतीगत क्षेत्र से अधिक है। परंतु भारत से कई ज्यादा नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पादों का निर्यात श्रीलंका से किया जाता है।

श्री जे आर लॉबो, विधायक, मंगलूरु दक्षिण ने बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने बोर्ड की गतिविधियों की सराहना की तथा आश्वासन दिया कि कर्नाटक में नीरा उतारने की अनुमति के लिए उपयुक्त कार्रवाई की जाएगी। दक्षिण कन्नड जिला पंचायत की अध्यक्षा श्रीमती आशा तिम्मप्पा गौड़ा, मंगलूरु नगर निगम की आदरणीय मेयर श्रीमती जसींता विजय आल्फ्रेड तथा डॉ. चौडप्पा, निदेशक, सीपीसीआरआई, कासरगोड़ ने सभा को संबोधित किया। श्री हेमचंद्रा, उप निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलूरु ने सभा का स्वागत किया और बोर्ड के सहायक विपणन अधिकारी श्री सिद्धरामेश्वरा स्वामी ने धन्यवाद अर्पित किया।

डॉ.चौडप्पा, निदेशक, सीपीसीआरआई की अध्यक्षता में तकनीकी सत्र चलाया गया। सीपीसीआरआई के डॉ.के.बी. हेब्बार ने नीरा के विशेष संदर्भ में मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों के बारे में और सीपीसीआर आई द्वारा आयोजित मूल्यवर्धित उत्पाद निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में संक्षिप्त में बताया। सीपीसीआरआई के डॉ. रवि भट ने कर्नाटक के तटीय क्षेत्रों के लिए आधुनिक नारियल खेती प्रौद्योगिकी तथा मिट्टी के सुधार के लिए नारियल अवशिष्ट के उपयोग के संबंध में बताया। श्री हेमचंद्रा , उप निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलूरु ने नारियल प्रौद्योगिकी मिशन एवं मिशन के प्रभाव के संबंध में व्याख्यान दिया। कुमारी गीतु, खाद्य प्रसंस्करण इंजिनीयर, सीआईटी वाष़क्कुलम ने नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था द्वारा विकसित नीरा प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी के संबंध में कहा। कु.सिमि थॉमस, तकनीकी अधिकारी , क्षेत्रीय कार्यालय बंगलूरु ने कर्नाटक में नारियल उत्पादक संगठनों की अद्यतन स्थिति तथा नाविबो द्वारा संगोठनों को दी जाती सुविधाओं के बारे में बात की। सर्वश्री अल्फा लावल, बंगलूरू के क्षेत्रीय बिजनस लीडर श्री के. परमेश्वरन ने परिपक्व नारियल पानी, नारियल दूध, वर्जिन नारियल तेल, नीरा आदि के लिए उपयुक्त सेपरेटर मशीनरी के बारे में सभा को अवगत कराया। सर्वश्री टीक्राफ्ट्स लिमिटड, कोयंबत्तूर ने डेसिकेटड नारियल की मशीनरियों के संबंध में बताया।

कार्यक्रम के भाग स्वरूप आयोजित प्रदर्शनी में सर्वश्री केराटेक, तृश्शूर, सर्वश्री इंडस बायो प्रोडक्ट्स, पुट्टूर, सर्वश्री पालक्काट कोकोनट प्रोड्युसर्स कंपनी लिमिटड तथा सर्वश्री तेजस्विनि कोकोनट प्रोड्यूसर्स कंपनी लिमिटेड, कण्णूर आदि ने अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया।

# नाविबो की नीरा का लोकार्पण

नारियल विकास बोर्ड के वाष़क्कुलम स्थित नारियल प्रौद्योगकी संस्था द्वारा प्रसंस्करित और पैकटबंद की गई नीरा का लोकार्पण 16 जुलाई 2015 को नाविबो के मुख्यालय में संपन्न हुआ। श्री पी.सी.सिरियक भाप्रसे (सेवानिवृत्त), भूतपूर्व अपर मुख्य सचिव, तमिलनाडु ने नाविबो की नीरा का लोकार्पण श्री एस.बालकृष्णन, भूतपूर्व अध्यक्ष, अपेक्स काउंसिल, एरणाकुलम रेसिडेन्ट्स असोसिएशन को प्रदान करते हुए किया। श्री टी.के.जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नाविबो, श्री जिजो जोण, प्रिंसिपल, एसआरवी हाई स्कूल, बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी श्री सुगत घोष और सचिव डॉ.ए.के.नंदी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

## सेवानिवृत्ति

श्री विजयकुमार हल्लिकेरी, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलूरु 11 मई 2015 को बोर्ड की सेवाओं से स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 1987 में बोर्ड में कार्यारंभ किया था।

श्री के.गंगा राजु, एमटीएस अधिवर्षिता प्राप्ति पर 30 अप्रैल, 2015 को बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 1997 में बोर्ड में कार्यारंभ किया था।

श्री बलराम प्रसाद ध्रुवंशी, एमटीएस 1 मार्च, 2015 को बोर्ड की सेवाओं से स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 1989 में बोर्ड में कार्यारंभ किया था।

# बाज़ार समीक्षा

## जून 2015

**मुख्यांश**

- जून 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।
- पिछले महीने की तुलना में जून 2015 के दौरान नारियल तेल और खोपरे के अंतर्राष्ट्रीय भाव में थोड़ा सुधार का रुख रहा।

जून 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में नारियल, खोपरा और नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।

### नारियल तेल

कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13,000 रुपए पर खुला जो 2 जून को घटकर 12,800 रुपए हुआ और तत्पश्चात घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 1300 रुपए के कुल घाटे के साथ 11,700 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष़ा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 12,900 रुपए पर खुलकर 2 जून को घटकर 12,500 रुपए हुआ और प्रति क्विंटल 1300 रुपए के कुल घाटे के साथ 11,600 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13,700 रुपए पर खुला और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 900 रुपए के कुल घाटे के साथ 12,800 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12,415 रुपए और आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 12,019 रुपए था जो पिछले महीने के औसतन भाव से दस प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 13 से 16 प्रतिशत कम था। आलप्पुष़ा बाज़ार का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13,454 रुपए था जो पिछले महीने से 6 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 12 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 11,264 रुपए था जो पिछले महीने से 9 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 17 प्रतिशत कम था।

### पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का भाव जो प्रति क्विंटल 8600 रुपए पर खुला था 2 जून को घटकर 8400 रुपए हुआ और तत्पश्चात् घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 1050 रुपए के कुल घाटे के साथ 7550 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष़ा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 8900 रुपए पर खुलने के बाद 2 जून को घटकर 8500 रुपए हुआ तथा तत्पश्चात् घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 950 रुपए के कुल घाटे के साथ 7950 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में ऑफिस पास खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 8650 रुपए पर खुला, 2 जून को घटकर 8600 रुपए हुआ और तत्पश्चात् घटाव का रुख दिखाकर प्रति क्विंटल 700 रुपए का कुल घाटा सहित 7950 रुपए पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 8113 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 8510 रुपए रहा जो पिछले महीने से क्रमशः 14 और 6 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने से क्रमशः 17 और 15 प्रतिशत कम था। आलप्पुष़ा बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 8275 रुपए रहा जो पिछले महीने से 11 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने से 15 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 7652 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 18 प्रतिशत कम था। आंध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 7731 रुपए था जो पिछले महीने से 12 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत कम था।

### खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13140 रुपए था जो पिछले महीने से 8 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 9 प्रतिशत कम था।

### गोल खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 11546 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 9 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 13 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के तिप्तूर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13171 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 3 प्रतिशत अधिक था। कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 11719 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत कम था।

### सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10469 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 9 प्रतिशत अधिक था।

### नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 11096 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 31 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 23 प्रतिशत कम था।

अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 12901 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था।

बंगलुरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 17038 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 43 प्रतिशत अधिक था। मंगलूरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 17500 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 45 प्रतिशत अधिक था।

### डाब

कर्नाटक के मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10346 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 23 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 13 प्रतिशत अधिक था।

### अंतर्राष्ट्रीय

फिलिप्पीन्स (सी.आई.एफ. रोटरडैम) बाज़ार में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1110 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 3 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 19 प्रतिशत कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 740 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 17 प्रतिशत कम था।

फिलिप्पीन्स में जून 2015 के दौरान नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1075 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1085 यूएस $ था। महीने के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 666 यूएस $, 922 यूएस $ और 711 यूएस $ था।

## जुलाई 2015

**मुख्यांश**

- जुलाई 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में मिश्रित रुख रहा।
- पिछले महीने की तुलना में जुलाई 2015 के दौरान
- नारियल तेल और खोपरे के अंतर्राष्ट्रीय भाव में थोड़ा गिराव का रुख रहा।

जुलाई 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में नारियल, खोपरा और नारियल तेल के भाव में मिश्रित रुख रहा।

### नारियल तेल

कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 11,500 रुपए पर खुला जो 2 जुलाई को घटकर 11,300 रुपए हुआ। तत्पश्चात घटाव का ही रुख दर्शाकर भाव 20 जुलाई को 10,000 रुपए हुआ। उसके बाद बढ़ाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल कुल 600 रुपए के कुल लाभ सहित 12,100 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुषा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 11,800 रुपए पर खुला जो 2 जुलाई को घटकर 11000 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाते हुए 13 जुलाई को 9,900 रुपए पर पहुँचा। तत्पश्चात बढ़ाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 500 रुपए का कुल घाटा सहित 11,300 रुपए पर बाज़ार बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में

नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 12,700 रुपए पर खुला जो 2 जुलाई को घटकर प्रति क्विंटल 12,400 रुपए पहुँचा और घटाव का रुख दर्शाते हुए 11 जुलाई को 11,000 रुपए हुआ। तत्पश्चात् भाव में बढ़ाव का रुख जारी रहा और प्रति क्विंटल 500 रुपए के कुल लाभ सहित 13,200 रुपए पर बाज़ार बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10,927 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 10,508 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 11,656 रुपए था जो पिछले महीने के औसतन भाव से 12 से 13 प्रतिशत कम था और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 27 से 30 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9,715 रुपए था जो पिछले महीने से 14 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने के औसतन भाव से 31 प्रतिशत कम था।

## पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 7,400 रुपए पर खुलने के बाद 2 जुलाई को घटकर 7,275 रुपए हुआ और घटाव का रुख दिखाकर 11 जुलाई को 6,675 रुपए पहुँचा। तत्पश्चात् बढ़ाव का रुख दिखाकर प्रति क्विंटल 1000 रुपए के कुल लाभ के साथ 8,400 रुपए पर बाज़ार बंद हुआ। आलप्पुषा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 7,750 रुपए पर खुला जो 2 जुलाई को घटकर 7,600 रुपए हुआ तथा घटाव का रुख दर्शाकर 13 जुलाई को 6,700 रुपए पर पहुँचा। तत्पश्चात् बढ़ाव का रुख दिखाते हुए प्रति क्विंटल 300 रुपए के कुल लाभ के साथ 8,050 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में ऑफिस पास खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 7,800 रुपए पर खुला, 2 जुलाई को घटकर 7,600 रुपए हुआ और घटाव का रुख दिखाकर 11 जुलाई को 6,800 रुपए पहुँचा। तत्पश्चात् भाव बढ़कर प्रति क्विंटल 1000 रुपए के कुल लाभ सहित 8,800 रुपए पर बाज़ार बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 7,190 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 7,219 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 7,429 रुपए रहा जो पिछले महीने से क्रमशः 11 और 13 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने से क्रमशः 30 और 31 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 6,552 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 14 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 33 प्रतिशत कम था। आंध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 6,596 रुपए था जो पिछले महीने से 15 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 26 प्रतिशत कम था।

## खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13,775 रुपए था जो पिछले महीने से 5 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 14 प्रतिशत कम था।

## गोल खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12,113 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 18 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के तिप्तूर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13,107 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 12 प्रतिशत कम था। कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12,139 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 12 प्रतिशत कम था।

## सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10,252 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 12 प्रतिशत कम था।

## नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10,558 रुपए था जो पिछले महीने से 5 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 27 प्रतिशत कम था।

अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 12,785 रुपए था जो पिछले

महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत अधिक था।

बंगलूरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 16,407 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 30 प्रतिशत अधिक था। मंगलूरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 17,000 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 43 प्रतिशत अधिक था।

### डाब

कर्नाटक के मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10,074 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 3 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत कम था।

### अंतर्राष्ट्रीय

फिलिप्पीन्स (सी.आई.एफ. रोटरडैम) बाज़ार में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1,068 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष के इसी महीने की अपेक्षा 18 प्रतिशत कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 735 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 13 प्रतिशत कम था।

फिलिप्पीन्स में जुलाई 2015 के दौरान नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1,034 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1,073 यूएस $ था। महीने के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 647 यूएस $, 875 यूएस $ और 767 यूएस $ था।

## अगस्त 2015

**मुख्यांश**

- अगस्त 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।
- पिछले महीने की तुलना में अगस्त 2015 के दौरान नारियल तेल और खोपरे के अंतर्राष्ट्रीय भाव में घटाव का रुख रहा।

अगस्त 2015 के दौरान देश के प्रमुख बाज़ारों में नारियल, खोपरा और नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।

### नारियल तेल

कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 12,300 रुपए पर खुला जो 6 अगस्त को घटकर 12,200 रुपए हुआ और स्थिर रहकर प्रति क्विंटल 100 रुपए के कुल घाटे के साथ उसी भाव पर बंद हुआ। आलप्पुषा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 11,300 रुपए पर खुलकर 7 तारीख को बढ़कर 11,700 रुपए हुआ और 22 को फिर से बढ़कर 13,300 रुपए हुआ। तत्पश्चात मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 11800 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13,400 रुपए पर खुलने के बाद 5 तारीख को घटकर 13,300 रुपए हुआ और तत्पश्चात घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 600 रुपए के कुल घाटे के साथ 12,800 रुपए पर बंद हुआ। कोची बाज़ार में नारियल तेल का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12,217 रुपए, आलप्पुषा में प्रति क्विंटल 11,685 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 13,013 रुपए रहा जो पिछले महीने के भाव से 11 से 12 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष के इसी महीने के भाव से 26 से 29 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10,777 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 11 प्रतिशत अधिक और पिछले साल इसी महीने के भाव से 30 प्रतिशत कम था।

### पेषण खोपरा

कोची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 8,600 रुपए पर खुला जो 6 अगस्त को घटकर 8,500 रुपए हुआ और तत्पश्चात स्थायी रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 100 रुपए के कुल घाटे के साथ उसी भाव पर बंद हुआ। आलप्पुषा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 8,100 रुपए पर खुला और 7 अगस्त को बढ़कर 8,400 रुपए और 8 वीं को 8,500 रुपए हुआ और तत्पश्चात मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 150 रुपए के कुल लाभ के साथ 8,250 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में ऑफिस पास खोपरे

का भाव प्रति क्विंटल 8,900 रुपए पर खुलने के बाद 4 अगस्त को घटकर 8,700 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 850 रुपए के कुल घाटे के साथ 8,050 रुपए पर बंद हुआ। कोची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 8,517 रुपए और आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 8,375 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 16 से 18 प्रतिशत आधिक और पिछले वर्ष इसी महीने के भाव से 25 प्रतिशत कम था। कोषि़क्कोट बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 8,233 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 10 प्रतिशत अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने के भाव से 28 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 7592 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 16 प्रतिशत अधिक और पिछले साल इसकी महीने के भाव से 28 प्रतिशत कम था। आंध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का औसतन भाव प्रति क्विंटल 7,219 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 9 प्रतिशत अधिक और पिछले साल इसकी महीने के भाव से 28 प्रतिशत कम था।

### खाद्य खोपरा

कोषि़क्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 13,627 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से थोड़ा कम और पिछले साल इस महीने के भाव से 27 प्रतिशत कम था।

### गोल खोपरा

कोषि़क्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12,188 रुपए था जो पिछले महीने से थोड़ा अधिक और पिछले साल इसी महीने के भाव से 29 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के तिप्तुर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13,168 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र अधिक और पिछले साल इसी महीने के भाव से 27 प्रतिशत कम था। कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 11,572 रुपए था जो महीने के भाव से 5 प्रतिशत कम और पिछले साल इसी महीने के भाव की अपेक्षा 35 प्रतिशत कम था।

### सूखा नारियल

कोषि़क्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 11,167 रुपए रहा जो पिछले महीने के भाव से 9 प्रतिशत अधिक और पिछले साल इसी महीने के भाव से 14 प्रतिशत कम था।

### नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 11,208 रुपए रहा जो पिछले महीने के भाव से 6 प्रतिशत अधिक और पिछले साल के इसकी महीने के भाव से 24 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 11,392 रुपए रहा जो पिछले महीने के भाव और पिछले साल इसी महीने के भाव से 11 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के बंगलूरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 15,654 रुपए रहा जो पिछले महीने के भाव से 5 प्रतिशत कम और पिछले साल इसी महीने के भाव से 15 प्रतिशत अधिक था। मंगलूरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 16,615 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से थोड़ा कम और पिछले साल के इसी महीने के भाव से 12 प्रतिशत अधिक था।

### डाब

कर्नाटक के मद्दुर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10,115 रुपए रहा जो पिछले महीने के भाव से थोड़ा अधिक और पिछले साल के इसी महीने के भाव से थोड़ा कम था।

### अंतर्राष्ट्रीय

फिलिप्पीन्स (सी.आई.एफ. रोटरडैम) बाज़ार में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1056 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा थोड़ा कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 14 प्रतिशत कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 721 यूएस $ था जो पिछले महीने तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा थोड़ा कम था।

फिलिप्पीन्स में अगस्त 2015 के दौरान नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1032 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1022 यूएस $ था। महीने के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल(आरबीडी) और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 571 यूएस $, 771 यूएस $ और 738 यूएस $ था।

# बाज़ार भाव

## जून 2015

| तारीख | नारियल तेल | | | | पेषण खोपड़ा | | | | | खाद्य खोपड़ा | गोल खोपड़ा | | | सूखा नारियल | नारियल | आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (रु. / क्वि.) | | | | | | | | | | | | | (रु./1000 फल) | | | | | |
| | कोची | आलप्पुषा | कोषिक्कोट | कंगयम | कोची (एफएक्यू) | आलप्पुषा (राशि खोपड़ा) | कोषिक्कोट | कंगयम | अंबाजिपेटा | कोषिक्कोट | कोषिक्कोट | तिप्पूर | बैंगलूर | अरसिकेरे | कोषिक्कोट | नेडुमंगाड | अरसिकेरे | बेंगलूर | मैंगलूर (ग्रेड-1) |
| 07.06.15 | 12717 | 12300 | 13567 | 11222 | 8342 | 8425 | 8575 | 7600 | 7700 | 13783 | 12075 | 12933 | 16625 | 11166 | 10567 | 13083 | 13400 | 17000 | 17000 |
| 14.06.15 | 12450 | 12167 | 13500 | 11411 | 8150 | 8325 | 8550 | 7617 | 7633 | 13108 | 11542 | 12892 | 16000 | 11328 | 10500 | 10500 | 12667 | 17000 | 17000 |
| 21.06.15 | 12400 | 11900 | 13500 | 11422 | 8100 | 8217 | 8550 | 7825 | 7900 | 12950 | 11375 | 13351 | 14833 | 12941 | 10500 | 10500 | 13500 | 17000 | 17833 |
| 28.06.15 | 12300 | 11850 | 13433 | 11189 | 8025 | 8225 | 8492 | 7683 | 7767 | 12817 | 11250 | 13467 | 13500 | 11490 | 10350 | 10500 | 12505 | 17000 | 18000 |
| 30.06.15 | 11800 | 11600 | 12900 | 10700 | 7625 | 8000 | 8125 | 7300 | 7500 | 12850 | 11375 | 13300 | 13500 | 11571 | 10350 | 10500 | 11500 | 17500 | 18000 |
| **औसत** | 12333 | 11963 | 13380 | 11189 | 8048 | 8238 | 8458 | 7605 | 7700 | 13102 | 11523 | 13189 | 14892 | 11699 | 10453 | 11017 | 12714 | 17100 | 17567 |

## जुलाई 2015

| तारीख | नारियल तेल | | | | पेषण खोपड़ा | | | | | खाद्य खोपड़ा | गोल खोपड़ा | | | सूखा नारियल | नारियल | आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (रु. / क्वि.) | | | | | | | | | | | | | (रु./1000 फल) | | | | | |
| | कोची | आलप्पुषा | कोषिक्कोट | कंगयम | कोची (एफएक्यू) | आलप्पुषा (राशि खोपड़ा) | कोषिक्कोट | कंगयम | अंबाजिपेटा | कोषिक्कोट | कोषिक्कोट | तिप्पूर | बैंगलूर | अरसिकेरे | कोषिक्कोट | नेडुमंगाड | अरसिकेरे | बेंगलूर | मैंगलूर (ग्रेड-1) |
| 05.07.15 | 11350 | 11100 | 12275 | 9800 | 7306 | 7563 | 7550 | 6425 | 7500 | 13125 | 11500 | 12963 | 13500 | 12373 | 10250 | 10500 | 12750 | 17500 | 17000 |
| 12.07.15 | 10817 | 10533 | 11525 | 9278 | 6950 | 7192 | 7125 | 6167 | 7567 | 13717 | 12000 | 12950 | 13500 | 12589 | 10150 | 10500 | 12033 | 17000 | 17000 |
| 19.07.15 | 10400 | 9900 | 11000 | 9111 | 6675 | 6730 | 6800 | 6100 | 6750 | 13560 | 11800 | 13167 | 14500 | 12230 | 9830 | 10500 | 13500 | 16000 | 17000 |
| 26.07.15 | 10533 | 10167 | 11167 | 9678 | 7092 | 6983 | 7383 | 6650 | 5600 | 13950 | 12325 | 13058 | 15500 | 12076 | 9833 | 10333 | 13333 | 16000 | 17000 |
| 31.07.15 | 11720 | 11020 | 12560 | 10940 | 8020 | 7750 | 8380 | 7540 | 5720 | 14370 | 12800 | 13400 | 15500 | 11380 | 11300 | 11000 | 12200 | 15800 | 17000 |
| **औसत** | 10964 | 10544 | 11705 | 9761 | 7209 | 7244 | 7448 | 6576 | 6627 | 13744 | 12085 | 13108 | 14500 | 12130 | 10273 | 10567 | 12763 | 16460 | 17000 |

## अगस्त 2015

| तारीख | नारियल तेल | | | | पेषण खोपड़ा | | | | | खाद्य खोपड़ा | गोल खोपड़ा | | | सूखा नारियल | नारियल | आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (रु. / क्वि.) | | | | | | | | | | | | | (रु./1000 फल) | | | | | |
| | कोची | आलप्पुषा | कोषिक्कोट | कंगयम | कोची (एफएक्यू) | आलप्पुषा (राशि खोपड़ा) | कोषिक्कोट | कंगयम | अंबाजिपेटा | कोषिक्कोट | कोषिक्कोट | तिप्पूर | बैंगलूर | अरसिकेरे | कोषिक्कोट | नेडुमंगाड | अरसिकेरे | बैंगलूर | मैंगलूर (ग्रेड-1) |
| 09.08.15 | 12257 | 11414 | 13300 | 10824 | 8557 | 8200 | 8557 | 7629 | 7329 | 13721 | 12179 | 13493 | 15500 | 11835 | 11371 | 11429 | 11299 | 15714 | 17000 |
| 16.08.15 | 12200 | 11700 | 13120 | 11033 | 8500 | 8500 | 8250 | 7667 | 7150 | 13540 | 12100 | 13367 | 15500 | 11387 | 11240 | 12000 | 11267 | 16000 | 17000 |
| 23.08.15 | 12200 | 12500 | 12800 | 10689 | 8500 | 8925 | 8067 | 7542 | 6833 | 13600 | 12208 | 13033 | 14833 | 11811 | 11033 | 11000 | 12417 | 16000 | 16500 |
| 31.08.15 | 12167 | 11717 | 12800 | 10586 | 8333 | 8292 | 8008 | 7536 | 7500 | 13617 | 12250 | 12786 | 14500 | 11264 | 11000 | 10500 | 10714 | 15000 | 16000 |
| **औसत** | 13929 | 13353 | 14492 | 12662 | 9529 | 9349 | 9313 | 8752 | 8727 | 14335 | 12781 | 13094 | 16430 | 12112 | 11059 | 16000 | 13348 | 16800 | 17633 |

***स्रोत***

**कोची : कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2**
**कोषिक्कोट : 'मातृभूमि'**
**आलप्पुषा : 'मलयाला मनोरमा'**
**अरसिकेरे : ए पी एम सी, अरसिकेरे**
**कोषिक्कोट बाज़ार में 'ऑफीस पास' खोपड़े का और आलप्पुषा बाज़ार में 'राशि' खोपड़े का बताया गया भाव**
**सौ.न. : सौदा नहीं**